वर्ष-10, अंक 83 पृष्ठ- 8, मूल्य : 02 रुपये

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज मंगलवार 04 जून, 2024

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Adhunik Samachar

संक्षिप्त समाचार

दक्षिण में धाक जमाती दिख रही भाजपा, चंद्रबाबू के साथ आने से एनडीए को मिली मजबूती

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। एक्जिट पोल में भाजपा दक्षिण में भी बड़ी कामयाबी हासिल करती दिख रही है। न्यूज18 इंडिया एक्जिट पोल के अनुसार, आंध्र प्रदेश में

एक्जिट पोल में 25 में से 19 से 23 सीटें राजग को मिलने जा रही हैं। वाईएसआर कांग्रेस को तीन से पांच सीटें मिल रही हैं। कांग्रेस का खाता भी खुलता नहीं दिख रहा है। उधर, आंध्र प्रदेश में विधानसभा चुनाव में भी टीडीपी और भाजपा की स्पष्ट रूप से सरकार बनती दिख रही है सत्तारूढ़ वाईएसआरसीपी सभी 175 सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए चुनावी मैदान में उतरी है। एनडीए गठबंधन के भीतर सीट बंटवारे की व्यवस्था के तहत टीडीपी को 144 विधानसभा सीटें दी गई हैं और प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता से उत्साहित भाजपा 10 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। आंध्र प्रदेश में विधानसभा चुनाव में भी टीडीपी और भाजपा की स्पष्ट रूप से सरकार बनती दिख रही है। एक्सिस माई इंडिया ने आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में टीडीपी को 78-96 सीटें, वाईएसआरसीपी को 55-77 सीटें, जेएसपी को 16-18 सीटें, बीजेपी को 4-6 सीटें और कांग्रेस को 0-2 सीटें मिलने का अनुमान लगाया है। इस तरह एनडीए को कुल 98-120 सीटें मिल सकती हैं, जबकि वाईएसआरसीपी को 55-77 सीटें मिलने का अनुमान है। आंध्र प्रदेश में 175 निर्वाचन क्षेत्रों पर 2024 के विधानसभा चुनाव आम चुनावों के साथ-साथ आयोजित किए गए थे 2024 लोकसभा चुनाव में सीएम जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व में वाईएसआरसीपी ने जोरदार प्रचार किया।

चलती कार में स्टंट करना शख्स को पड़ेगा भारी स्विफ्ट की छत पर खड़े होकर बनाई रील, पुलिस ने लिया संज्ञान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। आजकल लोग सोशल मीडिया पर रील बनाने के चक्कर

में कुछ भी करने को तैयार हैं, भले ही उसमें उनकी जान जोखिम में क्या ना पड़ जाए। दरअसल, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें एक शख्स ट्रैफिक नियमों को तार-तार करते हुए अपनी और सड़क पर दूसरों की जान जोखिम में डाल रहा है। मामला राजस्थान के झालावाड़ जिले का है। लोग सोशल मीडिया पर रील बनाने के चक्कर में कुछ भी करने को तैयार हैं भले ही उसमें उनकी जान जोखिम में क्या ना पड़ जाए। दरअसल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें एक शख्स ट्रैफिक नियमों को तार-तार करते हुए अपनी और सड़क पर दूसरों की जान जोखिम में डाल रहा है। मामला राजस्थान के झालावाड़ जिले का है।वीडियो में शख्स चलती कार पर खतरनाक स्टंट करता हुआ दिखाई दे रहा है। मुंबई पुलिस ने वीडियो का संज्ञान लेकर संबंधित पुलिस स्टेशन को शख्स के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई करने के लिए सूचित किया।एक्स पर मुंबई पुलिस द्वारा टैग करने के बाद झालावाड़ पुलिस ने मामले पर रिप्लाई करते हुए लिखा, ठसम्बन्धित वृताधिकारी/थानाधिकारी को नियमानुसार विधिक कार्यवाही हेतु अवगत करवा दिया गया है।वायरल वीडियो में गाड़ी चला रहा शख्स स्विफ्ट कार का गेट खोलकर चलती कार से बाहर निकलता हुआ दिखाई दे रहा है। अचानक से वह कार के गेट पर खड़ा होकर छत पर चढ़ जाता है। पीछे से कोई दूसरा शख्स इसका वीडियो बना रहा है। वीडियो में कार का राजस्थान नंबर वाली नेम प्लेट भी साफ दिखाई दे रही है। हालांकि अभी पुलिस द्वारा शख्स पर कार्रवाई करने की बात सामने नहीं आई है।

अरुणाचल में विकास की राजनीति को मिला स्पष्ट जनादेश, मोदी शाह ने दी बधाई; झ्श् ने कहा- सिक्किम की आकांक्षाओं को पूरा करेंगे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अरुणाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में भाजपा की

शानदार जीत को विकास की राजनीति को मिला स्पष्ट जनादेश करार दिया और कहा कि राज्य के विकास के लिए उनकी पार्टी और भी अधिक उत्साह के साथ काम करती रहेगी। अरुणाचल प्रदेश में भाजपा ने तीसरी बार सत्ता में वापसी की है। मोदी ने एक्स पर पोस्ट में चुनाव में असाधारण मेहनत के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं की भी जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता राज्यभर में लोगों के बीच गए और उनसे जुड़े। प्रधानमंत्री ने सिक्किम विधानसभा चुनाव में जीत हासिल करने के लिए सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (एसकेएम) और मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग को भी बधाई दी। प्रधानमंत्री ने कहा- मैं आने वाले समय में सिक्किम की प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए राज्य सरकार के साथ काम करने की आशा करता हूं। मोदी ने विधानसभा चुनाव में भाजपा के पक्ष में मतदान करने वाले लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रधानमंत्री ने सिक्किम विधानसभा चुनाव में जीत हासिल करने के लिए सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (एसकेएम) और मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग को भी बधाई दी। प्रधानमंत्री ने कहा- 'मैं आने वाले समय में सिक्किम की प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए राज्य सरकार के साथ काम करने की आशा करता हूं।' मोदी ने विधानसभा चुनाव में भाजपा के पक्ष में मतदान करने वाले लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया और कार्यकर्ताओं के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हमारी पार्टी सिक्किम के विकास और लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में हमेशा आगे रहेगी। अरुणाचल के मुख्यमंत्री प्रेमा खांडू ने कहा कि राज्य के लोगों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अहसान का बदला चुकाया है। राज्य में भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने जो विकास कराया है, वह प्रदेश में पार्टी की जीत का प्रमुख कारक है।'' उधर अरुणाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में केवल एक सीट मिलने पर कांग्रेस ने रविवार को कहा कि उसे जनादेश स्वीकार है। पार्टी प्रदेश अध्यक्ष नबाम तुकी ने कहा कि पार्टी चुनाव परिणामों से निराश है लेकिन हतोत्साहित नहीं है।

मोदी बदलते 'वर्ल्ड ऑर्डर' में भारत को बढ़त दिलाएंगे', पहली बार प्रधानमंत्री के समर्थन में बोले लेखक अमीश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। लेखक और पूर्व कूटनीतिज्ञ अमीश ने पहली बार लोकसभा चुनाव में खुलकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का समर्थन करते हुए कहा कि सही नेतृत्व मिलना जरूरी है, अगर भारत को बदलते व?र्ल्ड ऑर्डर का लाभ लेना है। लेखक और पूर्व कूटनीतिज्ञ अमीश ने पहली बार लोकसभा चुनाव में खुलकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का समर्थन करते हुए कहा कि सही नेतृत्व मिलना जरूरी है अगर भारत को बदलते व?र्ल्ड ऑर्डर का लाभ लेना है। उन्होंने कहा हम सब ऐसे अहम दौर में जी रहे हैं जहां बहुत सारी चीजों को फिर से लिखा और रचा जा रहा है और अधिकांश चीजों में भारत को अपना योगदान देना होगा। अपने हालिया वृत्तचित्र 'रामजन्मभूमि टेम्पलः द रिटर्न ऑफ ए स्प्लेंडिड सन' की सफलता के संबंध में दिए एक साक्षात्कार में अमीश ने कहा कि हम सब ऐसे अहम दौर में जी रहे हैं जहां बहुत

सारी चीजों को फिर से लिखा और रचा जा रहा है और अधिकांश चीजों में भारत को अपना योगदान देना होगा। उन्होंने कहा, उर्दू में शेर है, 'लम्हों ने खता की, सदियों ने सजा पाई'। अगर इस समय हमें सही नेतृत्व नहीं मिला तो हम विश्व क्रम (व?र्ल्ड ऑर्डर) में बदलाव का भारत को लाभ सुनिश्चित नहीं कर पाएंगे। इससे हमें और दशकों तक मुसीबतों का सामना करना होगा। उन्होंने कहा कि नया व?र्ल्ड ऑर्डर अगले-5-10 सालों में फिर से स्थापित होगा। ऐसे अवसर पर एक ऐसे नेता की आवश्यकता है जो भारत के हित में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चल रहे 'खेल' को अच्छी तरह से खेल सके। उन्होंने मौजूदा सरकार की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह सरकार इतनी सशक्त है कि पश्चिमी ताकतों के हर तरह के दबाव का डटकर मुकाबला कर सके। अपनी बात के समर्थन में अमीश ने उदाहरण दिया कि भारत ने कैसे मॉस्को और यूक्रेन के संघर्ष में भारत ने कैसे रूस से तेल का आयात जारी रखा। व्यापारिक शब्दावली में इसे प्रथम स्तर की रणनीति कहते हैं। उन्होंने कहा कि इतिहास में कई दफा ऐसा भी समय आया, जब हम दबाव के आगे नहीं टिक पाए थे। इसके कारण भारत ने बहुत कुछ सहा है। 49 वर्षीय अमीश लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग में नेहरु सेंटर के निदेशक और संस्कृति व शिक्षा मंत्री भी रह चुके हैं।

असम में बाढ़ मे मचाया कोहराम, 13 जिलों में पांच लाख से अधिक लोग प्रभावित; स्थिति गंभीर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
गुवाहाटी। असम में बाढ़ की स्थिति में अभी भी गंभीर बनीं हुई है। रविवार को और तीन लोगों की मौत की खबर है, हालांकि प्रभावित लोगों की संख्या में मामूली मोरीगांव, करीमगंज, नागांव, कछार, डिब्रूगढ़, गोलाघाट, कार्बी आंगलोंग पश्चिम और दीमा हसाओ जिलों में कुल 6,01,642 लोग प्रभावित हुए हैं। अधिकारियों ने बताया कि 28 मई से अब तक

कमी आई है। असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने कहा कि 13 जिलों में 5,35,246 लोग अब भी बाढ़ से प्रभावित हैं। शनिवार को 10 जिलों में प्रभावित लोगों की संख्या 6,01,642 थी असम में बाढ़ की स्थिति में अभी भी गंभीर बनीं हुई है। रविवार को और तीन लोगों की मौत की खबर है हालांकि प्रभावित लोगों की संख्या में मामूली कमी आई है। असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने कहा कि 13 जिलों में 535246 लोग अब भी बाढ़ से प्रभावित हैं। शनिवार को 10 जिलों में प्रभावित लोगों की संख्या 601642 थी। अधिकारियों ने बताया कि राज्य के विभिनन्‍ क्षेत्रों में भारी बारिश के कारण नदियों का जलस्तर बढ़ गया, जिससे कई क्षेत्रों में प्रभावित हुए लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया। कोपिली, बराक और कुशियारा नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। बाढ़ के कारण हैलाकांडी होजाई, बाढ़ और तूफान में मरने वालों की संख्या बढ़कर 15 हो गई है। नागांव में सबसे ज्यादा 2.79 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए जबकि होजाई में 1,26,813 और कछार में 1,12,265 लोग प्रभावित हुए हैं। राज्य में 40,000 से अधिक लोगों ने राहत शिविरों में शरण ली है। एनडीआरएफ, स्थानीय प्रशासन और आम नागरिकों द्वारा बचाव और राहत अभियान चलाया जा रहा है। वहीं, मणिपुर में भारी बारिश से आई बाढ़ में फंसे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा रहा है और राहत सामग्री प्रदान की गई है। सेना की स्पीयर कोर और असम राइफल्स के जवान राहत और बचाव कार्य में लगे हैं। खुमेन, लम्पक, नगरम और इंफाल सिटी में रविवार को लगभग ढाई हजार लोगों को भोजन और आवश्यक वस्तुओं का वितरण किया गया।

एअर इंडिया के विमान में केबिन क्रू से मारपीट, आरोपी यात्री गिरफ्तार; आईबी को सौंपी गई जांच

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मुंबई। कालीकट से बहरीन जा रहे एअर इंडिया के विमान में केबिन क्रू से मारपीट और विमान का दरवाजा पीछे गया और केबिन क्रू के साथ मारपीट शुरू कर दी। हमले के बाद उसने विमान का दरवाजा खोलने का प्रयास किया एक अन्य केबिन

खोलने की कोशिश करने के आरोप में 25 वर्षीय एक यात्री को गिरफ्तार किया गया है। सहार पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार यात्री अब्दुल मुसाविर नादुकंदील केरल का निवासी है। कालीकट से बहरीन जा रहे एअर इंडिया (ि घ्र्ही) के विमान में केबिन क्रू से मारपीट और विमान का दरवाजा खोलने की कोशिश करने के आरोप में 25 वर्षीय एक यात्री को गिरफ्तार किया गया है। सहार पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार यात्री अब्दुल मुसाविर नादुकंदील केरल का निवासी है। एअर इंडिया एक्सप्रेस एयरलाइन के अधिकारियों को सूचना दी गई कि विमान को डायवर्ट कर दिया गया है अधिकारियों ने बताया कि शनिवार दोपहर को एअर इंडिया एक्सप्रेस एयरलाइन के अधिकारियों को सूचना दी गई कि विमान को डायवर्ट कर दिया गया है। इसके बाद सीट नंबर 15डी पर बैठा अब्दुल मुसाविर विमान के क्रू सदस्य ने अब्दुल को रोका और उसे वापस उसकी सीट पर ले आया। इसके बावजूद, अब्दुल ने आस-पास के यात्रियों के साथ दु?र्व्यवहार और मारपीट जारी रखी। एक अधिकारी ने कहा कि सुरक्षा खतरे को देखते हुए पायलट ने दोपहर में विमान को छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतारा। इसके बाद एअर इंडिया एक्सप्रेस के सुरक्षा अधिकारियों ने अब्दुल को हिरासत में लिया और सहार पुलिस स्टेशन ले गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर अब्दुल को गिरफ्तार कर लिया। रविवार को उसे कोर्ट में पेश किया गया। इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) भी इस मामले को देख रही है और वे अब जांच करेंगे कि उसने विमान का दरवाजा खोलने की कोशिश क्यों की? अधिकारियों ने कहा कि वे यह भी जांच करेंगे कि क्या अब्दुल का आतंकवादी संगठनों से कोई संबंध है और उसने और कौन से अपराध किए हैं।

स्पेस स्टार्टअप अग्निकुल कॉसमॉस की अगले वर्ष तक उपग्रह लॉन्च करने की है तैयारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। दुनिया का पहला 3डी प्रिंटेड रॉकेट लांच कर कीर्तिमान रचने वाला भारतीय अंतरिक्ष स्टार्टअप अग्निकुल कॉसमॉस अगले साल की शुरुआत में उपग्रहों का प्रक्षेपण शुरू करने की तैयारी कर रहा है। अग्निबाण सब-(एसओआरटीईडी) की पहली परीक्षण उड़ान 66 सेकंड तक चली थी। 3डी प्रिंटेड रॉकेट जिसमें कंप्यूटर की मदद से डिजाइन कर परत दर परत उत्पाद बनाए जाते हैं। 3डी प्रिंटेड रॉकेट जिसमें कंप्यूटर की मदद से डिजाइन कर परत दर परत उत्पाद बनाए जाते हैं। आईआईटी मद्रास से जुड़े स्टार्टअप

आर्बिटल टेकनेलॉजी डेमोंस्ट्रेटर (एसओआरटीईडी) की पहली परीक्षण उड़ान 66 सेकंड तक चली थी।दुनिया का पहला 3डी प्रिंटेड रॉकेट लांच कर कीर्तिमान रचने वाला भारतीय अंतरिक्ष स्टार्टअप अग्निकुल कॉसमॉस अगले साल की शुरुआत में उपग्रहों का प्रक्षेपण शुरू करने की तैयारी कर रहा है। अग्निबाण सब-आर्बिटल टेकनेलॉजी डेमोंस्ट्रेटर अग्निकुल के सह-संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) श्रीनाथ रविचंद्रन ने कहा, एसओआरटीईडी एकल चरण वाला रॉकेट था। आर्बिटल रॉकेट में दो चरण होंगे। हम इसे लेकर कार्य कर रहे हैं। हम आर्बिटल मिशन के लिए इस वित्तीय वर्ष के अंत तक या अगले वित्तीय वर्ष के आरंभ तक का लक्ष्य लेकर चल रहे है।

अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य नियमों में संशोधन से कोविड जैसी बीमारियों का मुकाबला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। 77वीं विश्व स्वास्थ्य सभा (व?र्ल्ड हेल्थ असेंबली-डब्लूयूएचए) ने अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य नियमों, 2005 में संशोधन करते हुए भविष्य में 194 सदस्य देशों को कोविड-19 जैसी किसी संबंध में कई देशों के बीच गतिरोध रहा।लेकिन भारत ने इस मसौदे को तैयार करने में अहम भूमिका निभाकर इसके संचालन में हिस्सेदारीजनस्वास्थ्य की आपात स्थितियों में विकासशील देशों की न्यायसंगत जवाबदेही निर्धारित

करने का रास्ता बनाया है। भारत ने आइएचआर-2005 के संशोधन में अहम भूमिका निभाते हुए सदस्य देशों को संशोधित नियमों पर सहमत कराने का काम किया है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय का कहना है कि इस वैश्विक महामारी से बचाने के लिए कमर कस ली है। सदस्य देशों के 300 प्रस्तावों को सर्वसम्मति से मंजूर करके इसका खाका तैयार किया गया है। भारत ने आइएचआर-2005 के संशोधन में अहम भूमिका निभाते हुए सदस्य देशों को संशोधित नियमों पर सहमत कराने का काम किया है।स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय का कहना है कि इस संबंध में कई देशों के बीच गतिरोध रहा। लेकिन भारत ने इस मसौदे को तैयार करने में अहम भूमिका निभाकर इसके संचालन में हिस्सेदारी, जनस्वास्थ्य की आपात स्थितियों में विकासशील देशों की न्यायसंगत जवाबदेही निर्धारित करने का रास्ता बनाया है। अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य नियमों, 2005 (आइएचआर-2005) में संशोधन को अंतिम रूप 28 मई को दिया गया।

यूपी, बिहार और छत्तीसगढ़ में लू से 28 की मौत, पीएम मोदी ने लिया तैयारियों का जायजा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। प्रचंड गर्मी और लू से मौतों का क्रम थम नहीं रहा है। रविवार को उत्तर प्रदेश में 13,

छत्तीसगढ़ में छह, झारखंड में पांच और बिहार में चार की मौत हो गई। इस बीच भारतीय मौसम विभाग ने कहा है कि सोमवार (तीन जून) को भी देश के अधिकांश हिस्सों में लू चलने की संभावना है। पंजाब हरियाणा-चंडीगढ़-दिल्ली जम्मू संभाग हिमाचल प्रदेश उत्तर प्रदेश राजस्थान मध्य प्रदेश विदर्भ छत्तीसगढ़ और ओडिशा के अलग-अलग क्षेत्र इससे प्रभावित रह सकते हैं। इस बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गर्मी की स्थिति और मानसून की शुरुआत की तैयारियों की समीक्षा के लिए दिल्ली में एक बैठक की। पीएम ने अस्पतालों और अन्य सार्वजनिक स्थलों के फायर और विद्युत सुरक्षा आडिट नियमित रूप करने के निर्देश दिए। पंजाब, हरियाणा-चंडीगढ़-दिल्ली, जम्मू संभाग, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, विदर्भ, छत्तीसगढ़ और ओडिशा के अलग-अलग क्षेत्र इससे प्रभावित रह सकते हैं। रविवार को यूपी के चित्रकूट में दो मरीजों की मौत हो गई। जालौन में पांच, उनन्व व कन्नैज में एक-एक व हमीरपुर में तीन लोगों ने दम तोड़ दिया। फतेहपुर में एक पीएसी जवान की लू से मृत्यु हो गई। वहीं, प्रतापगढ़ में आंधी से जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया। इससे जगह-जगह पेड़ व बिजली के खंभे टूटकर गिर गए। करीब दो घंटे तक आंधी रही। आम गिरने से बागवानों को भी भारी नुकसान हुआ। पेड़ गिरने और वज्रपात की घटनाओं में दो महिलाओं सहित तीन की मौत हो गई। मौसम विभाग ने जलौन, झांसी, हमीरपुर, महोबा, ललितपुर व इसके आसपास में लू की चेतावनी जारी की है। रविवार को सर्वाधिक तापमान झांसी में 45.2 डिग्री सेल्सियस रहा।पलामू, गढ़वा, रामगढ़, चतरा आदि इलाकों में अब भी पार 44 से 45 डिग्री के बीच है। वहीं, मध्य प्रदेश में कहीं लू नहीं चली। शिवपुरी और टीकमगढ़ जिले में 44 डिग्री सेल्सियस तापमान रहा। पंजाब में भी मौसम गर्म रहा, लेकिन ब□ठडा को छोड़कर अन्य किसी जिले में लू का प्रभाव नहीं रहा। बठिंडा में अधिकतम तापमान 45.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। उत्तराखंड में बीते शनिवार शाम को हुई झमाझम वर्षा ने भीषण गर्मी से कुछ राहत दी है। खासकर देहरादून समेत मैदानी क्षेत्रों में तापमान में करीब चार डिग्री सेल्सियस की कमी दर्ज की गई है। आठ दिन बाद मैदानी क्षेत्रों में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से नीचे पहुंचा है।

भूतपूर्व सैनिक ने ट्रेन से कटकर दी जान, बहू की गोली मारकर कर दी थी हत्या, पिछले साल मिली थी जमानत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। भूतपूर्व सैनिक शिवमूरत तिवारी मूल रूप से करैली थाना क्षेत्र के करेहदा गांव के रहने वाले थे। वे भारतीय सेना में कार्यरत थे। लगभग बीस वर्ष पूर्व फौज से रिटायर होने के बाद से अपने ससुराल के गांव घूरपुर क्षेत्र के सारंगापुर में आकर बस गए थे क्षेत्र के सारंगापुर गांव के सामने से निकली मुंबई-हावड़ा रेलमार्ग पर सोमवार की सुबह एक वृद्ध ने ट्रेन से कटकर जान दे दी। उनकी पहचान सरंगापुर निवासी शिवमूरत तिवारी (80) के रूप में हुई। वह भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हुए थे। सूचना पर पहुंची घूरपुर पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शिवमूरत तिवारी मूल रूप से करैली थाना क्षेत्र के करेहदा गांव के रहने वाले थे। वे भारतीय सेना में कार्यरत थे। लगभग बीस वर्ष पूर्व फौज से रिटायर होने के बाद से अपने ससुराल के गांव घूरपुर क्षेत्र के सारंगापुर में आकर बस गए थे। उनके दोनों बेटे राजीव तिवारी और राना तिवारी भी सेना से रिटायर हो चुके हैं। मृतक अपनी ही बहू अंजू पतनी राजीव तिवारी की हत्या के आरोप में जेल जा चुके थे। आरोप है कि गत एक दिसंबर 2016 की सुबह उन्होंने पारिवारिक विवाद में अपनी लाइसेंसी बंदूक से बहू को गोली मारकर हत्या कर दी थी। बहू की हत्या के बाद वह आला कत्ल बंदूक लेकर खुद ही घूरपुर थाने पहुंच गए थे। गांव के लोगों के अनुसार पिछले वर्ष ही जेल से जमानत पर छूट कर आए थे।

देर रात दो हॉस्टलों में भिड़ंत के बाद पथराव-बमबाजी, भोर तक चला बवाल, तीन गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। पुलिस सूत्रों का कहना है कि दो दिन पहले दोनों हॉस्टल के छात्रों के बीच विवाद हुआ था। इसके बाद दोनों पक्ष आमने-सामने हो गए थे। शनिवार देर रात एक बार फिर विवाद शुरू हो गया। इसके बाद दोनों हॉस्टलों से ईंट-पत्थर चलाने के साथ ही बम पटके जाने लगे। कर्नलगंज में दो हॉस्टल के छात्रों के विवाद में शनिवार रात जमकर पथराव व बमबाजी हुई। इविवि यूनियन हाल गेट के पास हॉलैंड हॉल व एसएसएल हॉस्टल के छात्रों के बीच देर रात शुरू हुआ विवाद भोर तक चला। घटना में शामिल तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है जबकि उनके दो साथी फरार हैं। उधर सुबह दोनों हॉस्टलों में सर्च ऑपरेशन चलाकर 10 बम व बारूद समेत बम बनाने की अन्य सामग्री बरामद की गई। पुलिस सूत्रों का कहना है कि दो दिन पहले दोनों हॉस्टल के छात्रों के बीच विवाद हुआ था। इसके बाद दोनों पक्ष आमने-सामने हो गए थे। शनिवार देर रात एक बार फिर विवाद शुरू हो गया। इसके बाद दोनों हॉस्टलों से ईंट-पत्थर चलाने के साथ ही बम पटके जाने लगे। सूचना पर डायल 112 पुलिस पहुंची लेकिन मामला शांत नहीं हुआ। फिर थाने की फोर्स के साथ ही एसीपी कर्नलगंज भी पहुंच गए। पुलिस ने छात्रों को समझाने का प्रयास किया लेकिन वह नहीं माने और एक-दूसरे पर हमलावर बने रहे। भोर तक दोनों ओर से ईंट-पत्थर व बम चलाए जाते रहे। मामला शांत न होता देख पुलिस ने खदेड़ा तो हमलावर भागने लगे और इस दौरान तीन युवक पकड़ लिए गए। थाने में पूछताछ में उन्होंने अपना नाम मृत्युंजय कुमार निवासी गाजीपुर, सौरभ दीक्षित निवासी देवरिया और अंकित कुमार निवासी औरंगाबाद बिहार बताया। इनमें से अंकित फरार है। एसीपी राजीव कुमार यादव ने बताया कि दोनों फरार आरोपियों की तलाश की जा रही है।रविवार सुबह हॉलैंड हॉल हॉस्टल के अधीक्षक रंजीत सिंह व एसएसएल हॉस्टल के अधीक्षक पवन शर्मा की ओर घटना के संबंध में तहरीर दी गई। पकड़े गए युवकों से पूछताछ के बाद पुलिस ने सूचना देकर प्रॉक्टर को बुलाया और फिर दोनों हॉस्टलों में तलाशी ली गई। इस दौरान एसएसएल हॉस्टल में छत पर मौजूद खाली पानी की टंकी में छिपाकर रखे गए 10 बम बरामद हुए। जबकि हॉलैंड हॉल हॉस्टल से बारूद, गिट्टी, छर्रा समेत बम बनाने की सामग्री बरामद हुई। मौके पर बीडीडीएस टीम को भी बुलाकर जांच कराई गई।

बालू ठेकेदार को झलवा से शिवकुटी तक खदेड़कर फायरिंग वारदात से शहर में सनसनी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। अभिषेक यादव (30) गोविंदपुर का रहने वाला है और बालू का ठेकेदार है। उसने पुलिस

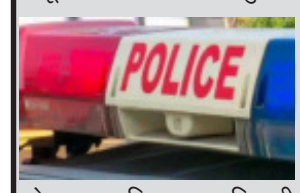

को बताया कि झलवा निवासी साहिल भी बालू का कारोबार करता है और उसे कई बार धमका चुका था। कहता था कि वह उसके इलाके में बालू की सप्लाई न करे। झलवा में शनिवार देर रात बालू की सप्लाई को लेकर हुए विवाद में दबंगों ने बालू ठेकेदार पर हमला बोल दिया। जान बचाकर भागने पर फॉर्च्यूनर समेत तीन गाड़ियों से पीछा किया और रास्ते में फायरिंग भी की। हमलावर पीछा करते हुए शिवकुटी में ठेकेदार के घर तक पहुंच गए। वहां पुलिस ने घेराबंदी कर फॉर्च्यूनर सवार छह लोगों को गिरफ्तार कर लिया, जबकि दो कारों में सवार उनके साथी भाग निकले। अभिषेक यादव(30) गोविंदपुर का रहने वाला है और बालू का ठेकेदार है। उसने पुलिस को बताया कि झलवा निवासी साहिल भी बालू का कारोबार करता है और उसे कई बार धमका चुका था। कहता था कि वह उसके इलाके में बालू की सप्लाई न करे। शनिवार रात 12 बजे के करीब वह अपने एक साथी के साथ बालू गिराने झलवा में गया था आरोप है कि वहां साहिल अपने एक अन्य साथी संग बाइक से आया और विवाद करने लगा। साथ ही फोन कर अपने कई साथियों को भी बुला लिया जो लाठी-डंडों से लैस थे। यह देख अभिषेक व उसका साथी कार से भागने लगे जिस पर साहिल व उसके साथियों ने तीन कारों से उनका पीछा कर लिया।

माफिया अतीक के तीन करोड़ के दो और फ्लैट मिले, गैंगस्टर में होंगे कुर्क

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। यह दोनों फ्लैट खुल्दाबाद के लूकरगंज स्थित एक अपार्टमेंट में स्थित हैं। पुलिस का पता चला है कि अपार्टमेंट बनने की शुरुआत में ही अतीक ने दो फ्लैट अपने नाम बुक करा लिए थे। फिलहाल, यह नहीं स्पष्ट हो पाया है कि इसके लिए माफिया ने कितने रुपये चुकाए अतीक अहमद की अपराध से अर्जित संपत्तियों की तलाश में जुटी कमिश्नरेट पुलिस ने उसकी बेशकीमती दो अन्य संपत्तियां तलाशी हैं। उसके दो फ्लैट मिले हैं, जिनकी कीमत तीन करोड़ हैं। फिलहाल, फ्लैट से जुड़े दस्तावेजों को खंगाला जा रहा है। पुलिस का कहना है कि जानकारी एकत्र करने के बाद इन दोनों को भी गैंगस्टर एक्ट में कुर्क किया जाएगा। यह दोनों फ्लैट खुल्दाबाद के लूकरगंज स्थित एक अपार्टमेंट में स्थित हैं। पुलिस का पता चला है कि अपार्टमेंट बनने की शुरुआत में ही अतीक ने दो फ्लैट अपने नाम बुक करा लिए थे। फिलहाल, यह नहीं स्पष्ट हो पाया है कि इसके लिए माफिया ने कितने रुपये चुकाए। पुलिस सूत्रों ने बताया कि दोनों ही फ्लैट जब बुक कराए गए तो इनकी कीमत महज 15-15 लाख रुपये थी। यह बात भी सामने आई है कि दोनों ही फ्लैट कुछ समय के लिए किराये पर भी उठाए गए। फिलहाल, पुलिस इनसे संबंधित दस्तावेजों को खंगालने में जुटी है। इसके लिए राजस्व विभाग के

कर्मचारियों की भी मदद ली जा रही है। इन दोनों फ्लैट को गैंगस्टर एक्ट में कुर्क किया जाएगा।उधर, अतीक अहमद की 12.42 करोड़ की बेनामी संपत्ति से संबंधित मामले में गैंगस्टर न्यायालय सात जून को फैसला सुनाएगा।

थरवई पुलिस ने किया खेल बम के हमले में घायल का नहीं कराया मेडिकल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। प्रयागराज-जौनपुर राजमार्ग पर थानापुर गांव के सामने

इसी गांव के रहने वाले कृपाशंकर शुक्ल होटल चलाते हैं। 23 मई की रात वह होटल पर बैठे थे। इसी बीच मामूली सी बात को लेकर हुई कहासुनी के बाद बाइक से पहुंचे तीन युवकों ने उन पर बम से जानलेवा हमला कर दिया। थरवई पुलिस का भी खेल निराला है। सप्ताह भर पहले होटल मालिक पर हुए बम से हमले में घायल का मेडिकल तक पुलिस कराना मुनासिब नहीं समझी। पुलिस की इस कार्यप्रणाली को लेकर भुक्तभोगी के साथ ही स्थानीय लोगों में भी गहरी नाराजगी है। उन्होंने उच्चाधिकारियों को शिकायती पत्र भेजकर कार्रवाई की मांग की है। प्रयागराज-जौनपुर राजमार्ग पर थानापुर गांव के सामने इसी गांव के रहने वाले कृपाशंकर शुक्ल होटल चलाते है। 23 मई की रात वह होटल पर बैठे थे। इसी बीच मामूली सी बात को लेकर हुई कहासुनी के बाद बाइक से पहुंचे तीन युवकों ने उन पर बम से जानलेवा हमला कर दिया।

वाराणसी में 14 टेबल पर 30 राउंड की होगी मतगणना, दोपहर तक तय हो जाएगा काशी का सांसद

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
वाराणसी। वाराणसी में मतगणना की तैयारी पूरी हो चुकी है। जिले

में कुल सात प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं। भाजपा के नरेंद्र मोदी और इंडी गठबंधन के अजय राय के बीच मुकाबला दिखेगा। चार मई को दोपहर तक काशी का सांसद तय हो जाएगा। लोकसभा सीट वाराणसी से कुल सात प्रत्याशी मैदान में हैं। मुख्य राजनीतिक दलों से तीन प्रत्याशी हैं। भाजपा, कांग्रेस (इंडी गठबंधन) और बसपा से हैं। मगर लड़ाई भाजपा के नरेंद्र मोदी और कांग्रेस के अजय राय के बीच हैं। पुलिस प्रशासन के स्तर से मतगणना के साथ-साथ सुरक्षा व यातायात आदि को लेकर तैयारियां तेज कर दी गई हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी एस राज लिंगम ने बताया कि 14 टेबल लगाई जाएंगी और 30 राउंड की मतगणना होगी। पोस्टल बैलेट की गिनती के लिए एक अलग से टेबल होगी और उस पर आरओ रहेंगे। वहीं कार्मिक वोटों की गिनती व घर-घर जाकर जो वोट डलवाए गए उनके लिए छह टेबल अलग से लगाई जाएंगी। सुबह 8:30 बजे से मतगणना शुरू हो जाएगी। वाराणसी जिले में आठ विधानसभा सीट हैं। जिसमें पांच सीटें रोहनियां, उत्तरी, दक्षिणी, कैंट और सेवापुरी वाराणसी लोकसभा में आती हैं। इसी तरह अजगरा और शिवपुर विधानसभा चंदौली लोकसभा सीट में आती हैं और मछलीशहर लोकसभा में पिंडरा विधानसभा आती है। सभी राजनीतिक दलों ने भी अपने-अपने प्रत्याशियों के लिए एजेंट बना लिए हैं और उनकी सूची जिला प्रशासन को सौंप दी है। माना जा रहा है कि दोपहर तक यह तय हो जाएगा कि काशी का सांसद कौन होगा और उसी तरह यह भी तय हो जाएगा कि देश में सरकार किसकी बन रही है। मतदान के दिन गर्मी से कई कर्मचारियों की तबीयत बिगड़ने की खबरें आई।

रिकॉर्ड बरकरार, नौतपा में नहीं हुई बारिश, खूब तपी काशी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
वाराणसी। इस बार नौतपा ने काशिवासियों का हाल बोहाल कर दिया। नौतपा में पहले दिन से

तापमान में बढ़ोत्तरी शुरू हुई, जिसका ग्राफ सप्ताह के अंतिम दिन गिरा। सूर्य के रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करते ही नौतपा की शुरुआत होती है। इसमें सूर्य के पृथ्वी के नजदीक रहने की वजह से तपिश भी बढ़ जाती है। पिछले साल की तुलना में इस साल नौतपा ने खूब तपाया। लोग गर्मी से बेचैन हो गए। नौतपा में पहले दिन से ही तापमान में बढ़ोतरी शुरू हुई और छठे दिन अधिकतम तापमान 47.8 डिग्री सेल्सियस पहुंचने से तापमान का नया रिकॉर्ड बन गया। यह मई महीने में पिछले 144 साल में सर्वाधिक तापमान रहा। अंतिम दिन दो जून यानी रविवार को अधिकतम तापमान 40.4 और न्यूनतम 26.0 डिग्री सेल्सियस रहा। इस कारण लोगों ने थोड़ी राहत महसूस की। पिछले महीने 25 मई से शुरू होकर नौतपा का असर इस साल दो जून तक रहा। नौतपा के पहले दिन 24 मई को अधिकतम तापमान 35.5 डिग्री सेल्सियस था जो कि नौतपा के पहले दिन 25 मई को बढ़कर 42.3 पहुंच गया।

ट्रेन से कटकर दो किशोरियों की मौत घर से शौच के लिए निकली थीं दोनों घरवालों ने लगाया हत्या का आरोप

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मऊ। मऊ जिले के सरायलखंसी थाना क्षेत्र के पनियरा गांव में रेलवे लाइन के पास दो किशोरियों का शव मिलने पर परिवार में कोहराम मच गया। घरवालों ने हत्या का आरोप लगाते हुए एक युवक के खिलाफ पुलिस में शिकायत की है। मऊ जिले के सरायलखंसी थाना क्षेत्र के पनियरा गांव स्थित रेलवे लाइन के पास रविवार की देर रात संदिग्ध परिस्थितियों में मालगाड़ी की चपेट में आने से दो किशोरियों की मौत हो गई। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं परिवार के लोगों ने हत्या का आरोप लगाते हुए एक युवक के खिलाफ पुलिस को तहरीर दी है। तहरीर के आधार पर पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी है। जानकारी के अनुसार आजमगढ़ जनपद के कोतवाली क्षेत्र कोलबाजबहादुर मोहल्ला निवासी रोशनी (13) पुत्री श्रवण कुमार बीते शुक्रवार को अपने गाजीपुर जनपद के मरदह थाना क्षेत्र के नखतपुर गांव निवासी मामा लालमणि के यहां आई हुई थी। रविवार की रात अपने ममेरी बहन बबली के साथ शौच करने गई थी। जब देर रात तक वापस नहीं आई तो परिवार के लोगों ने खोजना शुरू किया। देर के बाद भी जब दोनों नहीं मिलीं तो परिवार के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस की जांच पड़ताल के बीच पनियरा गांव स्थित रेलवे लाइन पर दो किशोरियों की ट्रेन से कटकर मौत की सूचना मिली। जानकारी होने पर परिवार के लोग मौके पर पहुंचे और दोनों शवों की पहचान बबली और रोशनी के रूप में की।

शादी में साथ बैठकर पी रहे थे शराब, कहासुनी के बाद चाकू से पेट-सीने में घोंपकर ली जान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
गाजीपुर। उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में जीजा ने साले की चाकू से घोंपकर हत्या कर दी। दोनों एक शादी समारोह के दौरान साथ में बैठकर शराब पी रहे थे। इसी दौरान किसी बात को लेकर विवाद हो गया। गाजीपुर शहर कोतवाली क्षेत्र के चौकिया में जीजा ने अपने साले की सीने और पेट में चाकू घोंपकर हत्या कर दी। वारदात के बाद मौके से आरोपी फरार हो गया। जांच में यह बात सामने आई कि हत्यारोपी के भाई की बेटी की शादी में जीजा-साले दोनों साथ में शराब पी रहे थे। इसी दौरान किसी बात को लेकर दोनों में कहासुनी हुई थी। कोतवाली क्षेत्र के चौकिया निवासी राजेंद्र राम की बेटी नीतू की शादी रविवार की रात हो रही थी। करीब 11 बजे राजेंद्र राम के भाई श्रीराम (40) व इनके साले व बहलोलपुर थाना जंगीपुर निवासी मिथिलेश उर्फ गुड्डू (35) शादी में आए थे।

यूपी कॉलेज में परीक्षा देने गई युवती बरामदे से गिरी, घायल; पिता ने बताई ये बात

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
वाराणसी। वाराणसी जिले के यूपी कॉलेज के बरामदे से गिरकर एक छात्रा घायल हो गई। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। छात्रा एमए फोर्थ सेमेस्टर की परीक्षा देने के लिए कॉलेज आई थी। यूपी कॉलेज में सोमवार को सुबह एमए फोर्थ सेमेस्टर की परीक्षा देने आई छात्रा कॉलेज के बरामदे से नीचे गिरकर घायल हो गई। मौके पर मौजूद छात्रों ने घायल छात्रा को पंडित दीनदयाल

पहुंचाया, जहां उसका इलाज चल रहा है। छात्रा के सिर, नाक की हड्डी टूटने के साथ पैर और शरीर के कई हिस्से में गंभीर चोटें आईं। वहीं पिता राजीव जायसवाल निवासी पंचकोशी का कहना है कि बेटी की मानसिक स्थिति अभी ठीक नहीं चल रही है। बिटिया की स्थिति टीचर से बताई थी। उसके बाद भी वह बरामदे से कैसे नीचे गिर गई, पता नहीं चल पाया। प्राचार्य प्रो. धर्मेंद्र सिंह ने कहा कि छात्रा मानसिक रूप से अस्वस्थ थी।

पत्नी और बच्चों के साथ सो रहे मजदूर की गला रेतकर हत्या सुबह बेटी ने खून से लथपथ शव देखा तो चीख पड़ी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
गाजीपुर। जिले में सो रहे मजदूर को सोमवार की सुबह बेटी जगाने पहुंची तो खून से लथपथ शव देखकर चीख पड़ी। आवाज सुनकर पहुंचे अन्य लोगों ने देखा तो इसकी

सूचना पुलिस को दी। गाजीपुर कासिमाबाद थाना क्षेत्र के सीउरा ग्राम सभा के लम्महीं स्थित ईट भट्ठे पर पतने और बच्चों के साथ सो रहे मऊ निवासी मजदूर की रविवार की रात गला रेतकर हत्या कर दी गई। हत्या की जानकारी सुबह तब हुई जब बड़ी बेटी अपने पिता को उठाने के लिए पहुंची। फिलहाल, पुलिस शव को कब्जे में लेकर जांच में जुट गई है। सीउरा ग्राम सभा के लम्हुही पर रकौल निवासी राजेश यादव का ईट भट्ठा है। यहां तीन-चार दिन पहले ही इसहागपुर थाना हलधरपुर जनपद मऊ निवासी डब्लू राम (48) काम करने अपने परिवार के साथ आया था। वह ईट की पथाई का काम करता था। उसकी पतने उषा देवी के अलावा दो बेटे और दो बेटियां हैं। रविवार को डब्लू राम पूरे परिवार के साथ ईट के छल्ली पर सो रहा था। सुबह करीब छह बजे बड़ी बेटी सुंदरी (10) उसे उठाने के लिए पहुंची तो चीख पड़ी। उसके पिता डब्लू राम का गला आगे और पीछे से रेता हुआ था, वह खून से लथपथ था। हत्या की जानकारी होने पर लोगों की भीड़ जुट गई। मौके पर पहुंची कासिमाबाद पुलिस शव को कब्जे में लेकर जांच-पड़ताल में जुट गई। पुलिस मृतक की पतने और बच्चों को पूछताछ के लिए थाने ले गई है, जो उसके पास ही सो रहे थे। हालांकि पुलिस यह भी आशंका जाहिर कर रही है कि हत्या कहीं और करके शव लाकर यहां तो नहीं रख दिया।

आई.टी.आई में सीधे प्रवेश
NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र के प्रवेश कार्यालय का हुआ उद्घाटन

नैनी। नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र के प्रवेश कार्यालय का हुआ उद्घाटन भारत सरकार द्वार मान्यता प्राप्त नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र प्रवेश कार्यालय का सिविल डिफेंस प्रयागराज के मंडल अधिकारी रैनक गुप्ता के द्वार किया गया प्रशिक्षण केंद्र के प्रवेश प्रभारी मोहम्मद कौसर ने बताया कि प्रयागराज में न्यूनतम शुल्क मुझे प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। यहां इंडस्ट्रियल विजिट सेमिनार, ग्रुप डिस्कशन, आदि कराया जाता है जिसे प्रशिक्षणार्थियों का सर्वांगिन विकास होता है. केंद्र गुणवत्ता परिषद द्वारा स्टार ग्रेडिंग प्राप्त है. केंद्र के कंप्यूटर शिक्षक रोहित शुक्ल ने बताया कि सरकार द्वार छात्रवृत्ति एवं टैबलेट की सुविधा उपलब्ध है प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरन सरकार द्वार मांडे भी दिया जाता है प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरन सरकार द्वार मांडे भी दिया जाता है. मुख्य अतिथि ने नवीन प्रवेशार्थियों का स्वागत एवं उज्जवल भविष्य की कामना की अंतरराष्ट्रीय स्तर का है प्रयागराज नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण के द्र-रैनक गुप्ता.इस अवसर पर निरीक्षक विजय पांडे, रोहित शुक्ला, सचिन श्रीवास्तव, मोहम्मद कौसर, प्रदीप जायसवाल आदि लोग उपस्थित रहें।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र.के छात्र रेलवे में चयनित

नैनी। नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र के चार छात्रों का सिकंदराबाद में रेलवे में चयनित होने पर संस्थान परिवार ने बधाई दी है। प्रयागराज करछना तहसील के नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र के चार छात्रों का रेलवे के धारा रेल प्रोजेक्ट सिकंदराबाद में चयन होने से विद्यालय प्रबंधतंत्र द्वारा छात्र का सम्मान एवं अभिनन्दन किया। इस अवसर पर संस्थान के प्रवेश प्रभारी मोहम्मद कौसर ने इन छात्रों का समारोहपूर्वक अभिनंदन एवं सम्मान करते हुये कहा कि यह विद्यालय के लिये गौरव की बात है।संस्थान के शिक्षक सदैव इस बात पर बल देते हैं कि छात्र अच्छा सीखें और अपने भविष्य को उज्ज्वल एवं सफल बनावें। उन्होंने भविष्य में और मेहनत व लगन से अध्यापन व अध्ययन करने हेतु शिक्षकों और छात्रों का आह्वान किया। इस अवसर पर केक काटकर केंद्र का स्थापना दिवस भी मनाया गया।

Admission Open 2024-25

श्री सत्यदेव दुबे (प्रधानाचार्य)
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, भदोही

श्री सुजीत श्रीवास्तव (प्रधानाचार्य)
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, नैनी, प्रयागराज

इं. अर्चना सरोज (ट्रेनिंग एवं पलेसमेन्ट, अधिकारी
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, खागा, फतेहपुर

★ C.O.P.A.
★ Fitter
★ Computer Teacher Training
★ Electrician
★ Fire Safety & Industrial Security
★ Repair of Refrigerator & A.C.
★ Welding Technology
★ Certificate in YOGA
★ Security Service
★ Computer Hardware& Maintenance

Naini ITC Honored by U.P. State Industrial Association

JEEVAN EXPRESS NEWS

PRAYAGRAJ: A seminar was organized by Uttar Pradesh State Industrial Association on Friday. In which Naini Industrial Training Center was honored with a citation by the association's president Arvind Rai for providing high quality skilled workers. Mohammad Kausar received the honor from the Centre. On this occasion, all the entrepreneurs of Prayagraj including Arinnd Rai Sheetal Plastics, Anat Chandra Ventura Private Limited, BLKHN Engineering Works, S Shukla, Overseas Food Agro Private Limited, union officials and all the industrialists were present.

Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

भागीरथ के कठोर तपस्या से गंगा मृत्यु लोक में आई :आचार्य मनोहर कृष्ण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। श्री राम जानकी मंदिर सोनभद्र में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के चतुर्थ दिवस वृंदावन से

पधारे आचार्य मनोहर कृष्ण जी महाराज के द्वारा सूर्यवंश के वंशावली का विस्तार से वर्णन किया गया राजा सत्यव्रत की रक्षा करने के लिए भगवान नारायण मत्स्यरूप धारण करके आए आगे मां गंगा सगर के पुत्रों पर कृपा करती है भागीरथ के कठोर तपस्या से गंगा मृत्यु लोक में आई और सागर के 60000 पुत्रों को मुक्त किया महाराज खटवांग ढाई घंटे में ही भगवान नारायण को प्राप्त कर लिया हम और आप यदि सच्चे मन से घंटे दो घंटे भगवान का भजन करें तो भगवान हमारे ऊपर अवश्य कृपा करेंगे भक्त के ऊपर भगवान के प्रति विश्वास होना चाहिए विश्वासो फलदायकः यदि विश्वास होगा तो आपको फल की प्राप्ति होगी आगे चलते हुए राम कथा का विस्तार से वर्णन किया गया महाराज दशरथ के ऊपर गुरुदेव एवं यज्ञ भगवान की कृपा से चार पुत्रों का जन्म हुआ राम कथा का विस्तार से वर्णन किया भगवान ने शबरी पर कृपा की साबरी भील जाति में थी आदिवासी होने के बाद भी भगवान जात पात नहीं देखते भगवान भक्त के भाव को देखते हैं शबरी के अंदर भाव था कि भगवान आकर के मेरे यहां भोग लगाए भगवान जाकर के सवरी के यहां झूठ बेरो का भोग लगाया आगे चलते हुए चंद्रवंश के वंशावली का वर्णन करते हुए राजा रंग की देव के राज्य में अकाल पड़ गया भगवान स्वयं भिखारी का भेष धारण करके परीक्षा लेने के लिए आए और राजा रंतिदेव परीक्षा में पास हुए भगवान कृष्ण का बड़े धूमधाम से जन्मोत्सव मनाया गया सभी भक्त कृष्ण जन्मोत्सव का आनंद लिया।

33वीं पुण्यतिथि पर सांकेतिक चक्का जाम कर डाला गोली कांड के शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
डाला(सोनभद्र)। राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री व समाजवादी पार्टी के कार्यकाल में 2 जून 1991 को हुए डाला गोलीकांड में मारे गए अमर शहीदों की 33वीं पुण्यतिथि पर रविवार को सैकड़ों लोगों द्वारा डाला के हजारों नगर वासियों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। देश भर में अपने हक के लिए संघर्षरत वीरगति को प्राप्त हुए कर्मचारियों के इतिहास में डाला सीमेंट कर्मचारियों के अमर शहीदों का नाम आज भी बड़ी श्रद्धा व गौरव से लिया जाता है। उन्हीं भी शहीद हुए छात्र राकेश तिवारी के परिवार के लोगों द्वारा सुबह से वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूजा प्रारंभ कराया गया। जिसमें सुबह से दुर्गा सप्तशती पाठ हरि कीर्तन व सुंदर कांड पाठ किया गया। पं0 ओमप्रकाश तिवारी के नेतृत्व में सुबह

वाराणसी-शक्तिनगर राज्य मार्ग पर सांकेतिक चक्का जाम कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। डाला तेरा यह बलिदान, याद करेगा हिंदुस्तान के नारे ने आसमान को गुंजायमान कर दिया। वक्ताओं ने कहा कि यहां पर आज ही के दिन पुलिस की बर्बरता पूर्वक लाठी चार्ज व गोली से एक छात्र समेत नौ लोग शहीद हो गए थे। इन सभी शहीदों ने हजारों लोगों के साथ उत्तर प्रदेश सीमेंट निगम की डाला, चुनार, चुर्क, सीमेंट फैक्ट्री को प्राइवेट सेक्टर में तत्कालीन समाजवादी पार्टी के सीएम रहे स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव द्वारा बेचे जाने का विरोध कर रहे थे। इस दौरान मुख्यमंत्री के इशारे पर तत्कालीन डीएम ने सुरक्षा जवानों से आंदोलनकारियों पर लाठीचार्ज समेत पुलिस से ताबड़तोड़ गोली चलवा दिया था। यह घटना डाला की धरती पर 33 वर्ष पूर्व घटी थी, गोली कांड की घटना ने प्रदेश ही नहीं केंद्र सरकार को भी हिला कर रख दिया था। इस गोलीकांड की याद आते ही की याद में प्रत्येक वर्ष 2 जून को शहीदों की पुण्यतिथि नगर वासियों द्वारा मनाई जाती है। इस गोलीकांड में एक छात्र एवं आठ कर्मचारी शहीद हो गए थे। गोलीकांड के समयानुसार तीन बजकर बीस मिनट पर राजमार्ग पर वाहनों को रोककर सांकेतिक जाम किया गया। इसके बाद उपस्थित लोगों ने दो मिनट का मौन रखकर शहीदों की स्मारक पर माला फूल चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। संचालन वरिष्ठ पत्रकार नरेंद्र नीरव ने किया। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था में चौकी प्रभारी डाला राजेश कुमार सिंह मय पुलिस फोर्स के साथ डटे रहे। डाला गोलीकांड में निगम के कर्मचारी रामप्यारे कुशवाहा, शैलेंद्र कुमार राय, सुरेंद्र दुबे, बालगोविंद, रामधारी, रामनरेश राम, नंद कुमार गुप्ता, दीनानाथ एवं छात्र राकेश उर्फ जयप्रकाश त्रिपाठी शहीद हो गए थे, इसके अलावा सैकड़ों लोग गंभीर रूप से घायल भी हुए थे। शहीद छात्र परिवार ने शहीदों की याद में हर वर्ष की भांति इस वर्ष से ही समाजसेवी उत्तम मिश्रा, भाजपा नेता संतोष कुमार उर्फ बबलू, पूर्व छात्र संघ महामंत्री अनिकेत श्रीवास्तव, अंशु पटेल, क्षेत्रीय सभासद अवनीश पांडे, राकेश पासवान, राजेश पटेल, आदि ने राहगीरों समेत यात्रियों को ठंडा शरबत पिलाया गया। इस मौके पर पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा धर्मवीर तिवारी, अल्ट्राटेक हेड संदीप अवेरकर, एच0आर0 हेड संजीव राजपूत, कमलेश चौबे, प्रवीण सिंह, अंजनी पटेल, अविनाश शुक्ला, बृजेश तिवारी(जूली), राजू तिवारी, राजू मिश्रा, पूर्व जिला पंचायत सदस्य सुभाष पाल, सामाजिक कार्यकर्ता इंदू शर्मा, मुकेश जैन, मंगल जयसवाल, पवन शर्मा, चंद्रप्रकाश तिवारी, बलबीर, नगर पंचायत अध्यक्षा फूलवंती कुमारी, पं0 शुभम तिवारी, रविंद्रदेव पांडे, समेत शहीद परिवार से ओमप्रकाश तिवारी, सपना, विजय कुमार, कलावती देवी, शकुंतला राय, सुखमानी देवी, जितना देवी, बैजन्ती देवी व प्रभावती आदि लोग मौजूद रहे।

लोकसभा एवं विधानसभा उपचुनाव मतगणना को लेकर निर्देश जारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 राबर्ट्सगंज-80 एवं विधानसभा-403 दुद्धी उपनिर्वाचन-

2024 की मतगणना को सकुशल सम्पनन कराने हेतु मंगलवार को प्रातः 06:00 बजे से समाप्ति तक जारी ट्रैफिक एवं सामान्य एडवाईजरी। पुलिस अधीक्षक डॉक्टर यशवीर सिंह ने बताया कि मतगणना स्थल पर केवल उन्ही वाहनों व व्यक्तियों को प्रवेश करने की अनुमति दी जायेगी जिन्हे सक्षम अधिकारी द्वारा पास/परिचय पत्र निर्गत किया गया है। मतगणना स्थल/हाल के अन्दर बीड़ी, सिगरेट, माचिस, गुटखा, लाइटर, अस्त्र, शस्त्र, ब्रीफकेश, बैग, सेल्यूलर/मोबाईल फोन, पेपर या अन्य इस प्रकार की सामाग्री ले जाने की अनुमति नही दी जायेगी। कोई भी चार पहिया या दो पहिया वाहन वाराणसी शक्तिनगर के मुख्य मार्ग के दोनो तरफ खड़ा नही किया जायेगा। राजकीय पालीटेकिन्क लोढ़ी राबर्ट्सगंज के प्रवेश द्वार (पक्की सड़क) से केवल मतगणना कर्मी, अधिकारीगण, मतगणना में लगे पुलिस बल को ही प्रवेश दिया जायेगा। मतगणना में लगे अधिकारीगण, मतगणना कर्मी व पुलिस के अधिकारी/कर्मचारीगण के वाहनों की पार्किंग राजकीय पालिटेकिन्क लोढ़ी के मुख्य गेट से 100 मीटर पूर्व ही रोड के बाये तरफ पहाड़ी पर की गयी है कोई भी अपना चार पहिया, दो पहिया वाहन लेकर गेट के अन्दर प्रवेश नही करेगा। मुख्य प्रवेश द्वार (कच्ची सड़क) से प्रत्याशियों एवं उनके पोलिंग एजेण्टों, मीडिया कमिन्यों तथा उनके वाहनों को प्रवेश दिया जायेगा, जिन्हे सक्षम अधिकारी द्वारा पास/परिचय पत्र निर्गत किया गया है। विभिनन राजनैतिक पाटिन्यों के उम्मीदवारों उनके एजेंटो व मीडिया के लोगो के पार्किंग की व्यवस्था कच्ची सड़क से अन्दर जाकर राजकीय पालिटेकिन्क कालेज लोढ़ी के उत्तरी गेट की तरफ खाली स्थान में किया गया है। इसी गेट से राजनैतिक पाटिन्यों के प्रत्याशियों उनके एजेण्टों व मीडिया के लोगों को प्रवेश दिया जायेगा। पुलिस लाइन मोड़ से आर0टी0ओ0 कार्यालय तथा टोल प्लाजा तक हाईवे के दोनो तरफ नो पार्किंग जोन रहेगा जिसमें किसी भी प्रकार के वाहनो को खड़ा होने की अनुमति नही दी जायेगी। यातायात व्यवस्था के दृष्टिगत आवश्यकतानुसार बड़े वाहनों को हाथीनाला गुरमुरा के मध्य व मारकुण्डी घाटी के नीचे तथा सुकृत व हिन्दुआरी में रोका जायेगा। प्रातः 08:00 बजे से रात्रि 09:00 बजे तक बड़े वाहनों का प्रवेश (एम्बुलेंश व तेल टैंकर को छोड़कर) राबर्ट्सगंज शहर मे पूर्णतया प्रतिबन्धित रहेगा।

राज्य विद्युत परिषद प्राविधिक कर्मचारी संघ उप्र, पूर्वांचल परिक्षेत्र

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। देश की 18वीं लोकसभा के लिए संपनन हुए आम चुनाव-2024 में जिला प्रशासन व विद्युत विभाग की लापरवाही से चुनाव ड्यूटी में तैनात विद्युत कर्मी की

मौत पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम लि. के अन्तर्गत विद्युत वितरण खंड राबर्ट्सगंज सोनभद्र में तकनीशियन के पद पर तैनात थे मृतक स्व. उमाशंकर शर्मा प्राप्त जानकारी के अनुसार उमाशंकर शर्मा पुत्र रामानयन शर्मा जो कि पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के अंतर्गत विद्युत वितरण खंड राबर्ट्सगंज सोनभद्र में टेकनीशियन के पद पर कार्यरत थे जिनकी आम चुनाव-2024 में चुनाव ड्यूटी लगाई गई थी और दिनांक 31.05.2024 को कार्मिक राजकीय पॉलीटेकिन्क लोढी से ई.वी.एम. लेकर पोलिंग पार्टी के साथ तहसील घोरावल गए थे जहां उन्हें रिजर्व कार्मिक के रूप तैनात किया गया था। परंतु, अत्यवस्था के कारण उनकी तबियत अचानक खराब हो गई। जिला प्रशासन द्वारा कार्मिक के इलाज हेतु कोई सहयोग न प्राप्त होने पर सहकमिन्यों द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र घोरावल में टेकनीशियन कार्मिक को भर्ती कराया गया। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र द्वारा कार्मिक की हालत बिगड़ती देख जिला चिकित्सालय लोढ़ी राबर्ट्सगंज रेफर कर दिया गया किंतु कार्मिक की तबियत बिगड़ती देख जिला चिकित्सालय लोढ़ी राबर्ट्सगंज द्वारा उन्हें बी.एच.यू. वाराणसी के लिए रेफर किया गया। परिजनों एवं सहकमिन्यों द्वारा बी.एच.यू. वाराणसी के इमरजेंसी ओ.पी.डी. में भर्ती कराया गया जहां उनकी तबियत बिगड़ने पर बी.एच.यू. के डॉक्टरों द्वारा तत्काल उन्हें आई.सी यू. में शिफ्ट करने के लिए कहा गया, किंतु बी.एच.यू. के आइ.सी.यू. वार्ड में कार्मिक को जगह न मिलने के कारण परिजनों द्वारा आनन फानन में उनकी नाजुक स्थिति को देखते हुए तत्काल वाराणसी में ही रविंद्रपुरी अग्रिम हॉस्पिटल (अलकनंदा) में भर्ती करवाया गया जहां उनकी नाजुक स्थिति के दृष्टिगत उन्हें रविंद्रपुरी अग्रिम हॉस्पिटल (अलकनंदा) द्वारा वेंटीलेटर पर डाला गया और इलाज के दौरान ही दिनांक 02/06/2024 को सुबह 9:00 बजे टेकनीशियन कार्मिक उमाशंकर शर्मा को मृत घोषित कर दिया गया। सहकमिन्यों एवं परिवार ने आरोप लगाया कि चुनाव ड्यूटी में अव्यवस्थता के परिणामस्वरूप स्व.उमाशंकर की तबियत बिगड़ने के पश्चात जिला प्रशासन द्वारा कार्मिक के इलाज में समय रहते आवश्यक सहयोग नहीं दिया गया जिसके परिणामस्वरूप चुनाव ड्यूटी में तैनात विद्युत कर्मी की मृत्यु हो गई। चुनाव ड्यूटी में लगे तकनीशियन कार्मिक स्व. उमाशंकर शर्मा को ससमय आवश्यक स्वास्थ्य उपचार दिलवाने में जिला प्रशासन की लापरवाही व उदासीनता के कारण हुई उनकी मृत्यु पर परिजनों तथा प्रदेश के समस्त ऊर्जा निगमों के तकनीशियन संवर्ग में शोक की लहर है व जिला प्रशासन के प्रति व्यापक रोष व्याप्त है। परिजनों ने स्व. उमाशंकर शर्मा को ससमय स्वास्थ्य उपचार न उपलब्ध कराए जाने के दोषी जिम्मेदारों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की मांग की। संघ द्वारा चुनाव ड्यूटी में अपने प्राणों की आहुति देने स्व.उमाशंकर शर्मा के परिजनों को तत्काल नियमानुसार मुआवजा एवं उनके आश्रित को सरकारी नौकरी देने समेत इस लापरवाही के लिए दोषी अधिकारियों/ कर्मचारियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की मांग की।

जंगल में शव मिलने से गांव में हड़कंप जांच में जुटी पुलिस

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सलखन सोनभद्र। चोपन थाना क्षेत्र के गुरदह के जंगल में शनिवार दोपहर एक व्यक्ति का शव मिलने से हडकंप मच गया है। गुरदह के ग्राम प्रधान प्रतिनिधि दिनेश यादव के सूचना पर पहुंची चोपन पुलिस ने शव को शिनाख्त कर अपने कब्जे मे लेकर के पंचनामा कर अन्तपरिक्षण हेतू जिला चिकित्सालय भेज दिया। शव की शिनाख्त विक्रम पुत्र कयर उम्र लगभग 34-निवासी गुरदह,टोला अलउर,थाना चोपन के रूप मे हुई जो दो दिन पुर्व घर से निकला था वापस घर नही आने पर परिजनों द्वारा काफी खोजबीन की जा रही थी।इसी दौरान शनिवार दोपहर चरवाहों द्वारा गांव के जंगल में शव देखे जाने से हडकंप मच गया। स्थानीय लोगो एव पुलिस द्वारा प्रथम दृश्यता से सर्पदंश से मौत होने की आशंका जताई जा रही है।चूकी जहा मृत शव पडा था था वहां सर्पी का बसेरा था जो लोगों द्वारा देखा भी गया है।

लाइट पोल में टकराई बाइक एक की मौत तीन घायल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। सदर कोतवाली क्षेत्र के बबुरी गांव के समीप रविवार दोपहर बाद अनियंत्रित बाइक इलेक्ट्रिक पोल से जा टकराई जिसमें घायल चार व्यक्तियों में से एक 20 वर्षीय युवक की हुआ मौत। जानकारी के अनुसार मनीष कुमार 20 वर्षी पिता राम लखन निवासी मुसही चरखा टोला निवासी युवक रविवार दोपहर बाद एक बाइक से मनीष अपने मित्रों के साथ घूमने निकला था कि बिरधी गांव के समीप पहुंचते ही बबुरी टोला मोड पर लाइट पोल से बाइक जा टकराई जिसमें सवार चारों बाइक पर बैठे युवक घायल हो गए आसपास के लोगों द्वारा चारों को जिला अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सकों ने मनीष 20 वर्षी को अमृत घोषित कर दिया वहीं तीन घायलों का उपचार कर छोड़ दिया गया । उधर चिकित्सकों द्वारा पुलिस को सूचना दी गई तो मौके पहुंची पुलिस ने शव को सोमवार को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भिजवाते हुए अग्रिम कार्रवाई में जुटी।

भारत विकास परिषद नें मतदाताओं के लिए गई पेय पदार्थ की व्यवस्था

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। भारत विकास परिषद के तत्वाधान में जिला शाखा सोनभद्र के अध्यक्ष अजीत जायसवाल ने लोकसभा रॉबर्ट्सगंज लोकसभा मतदान के दिन राजकीय कन्या विद्यालय के मतदाताओं को भीषण गर्मी से राहत के लिए मतदान स्थल के निकट पेय पदार्थ की व्यवस्था की गई, अध्यक्ष ने कहा कि मतदान ज्यादा से ज्यादा हो और लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए आम जनमानस का सहयोग बहुत ही जरूरी होता है। इस मौके पर विजय श्रीवास्तव, कृष्ण मुरारी गुप्ता, संदीप जायसवाल, आनन्द मिश्रा, राजू सोनी, कमलेश कुमार, मनोज अग्रवाल मौजूद थे।

बारह चक्का ट्रक के धक्के से बाइक सवार दो युवक की दर्दनाक मौत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। चोपन थाना क्षेत्र के वाराणसी-शक्तिनगर मार्ग मारकुंडी बाजार के करगरा मोड़ के समीप तेज रफ्तार चल रही बारह चक्का ट्रक के धक्के से बाइक सवार दो युवक की मौके पर मौत हो गयी है। मौके से भाग रही ट्रक को चोपन पुलिस ने पकड़कर अपने हिरासत मे ले लिया है।घटना सोमवार की दोपहर तकरीबन बारह बजे की है। सूचना पाकर तत्काल मौके पर पहुंचे गुरमा चौकी प्रभारी सुरेश चन्द्र द्विवेदी ने जांच पड़ताल के बाद दोनो शव को कब्जे मे लेकर अन्तपरिक्षण हेतु जिला चिकित्सालय भेज दिए। दोनो शव की शिनाख्त प्रवीण पटेल पुत्र स्वःश्यामलाल पटेल नि0 आदित्य नगर, थाना लंका,जनपद वाराणसी एंव उमेश कुमार राजभर पुत्र कन्हैयालाल, उम्र तकरीबन 21बर्ष, नि0 मदेरवा,थाना लंका जनपद वाराणसी,के रूप मे हुयी गुरमा चौकी प्रभारी द्वारा घटना की सूचना मृतक के परिजनो को दे दी गयी है।

दिल में हिन्दुस्तान रखती हूं, गीता, बाइबिल, कुरान रखती हूं :कौशल्या चौहान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। शहीद स्थल प्रवंधन ट्रस्ट करारी सोनभद्र के स्थापना वर्षगांठ के अवसर पर रविवार को राबर्ट्सगंज कचहरी में दोपहर दो जून को ध्यान में रखकर ही शहीद स्थल की स्थापना की गई यह बात बताते हुए साहित्यकार प्रदुमन त्रिपाठी एड निदेशक शहीद स्थल प्रवंधन ट्रस्ट करारी सोनभद्र

काव्य गोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें कवियों और कवियित्रियों ने एक से बढ़कर एक कविता सुनाई। कवियित्री कौशल्या चौहान ने दिल में हिंदुस्तान रखती हूं, गीता, बाइबिल, कुरान रखती हूं सुनाया और देश को नमन किया। सरस काव्य गोष्ठी का शुभारंभ वाग्देवी सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर किया गया। वाणी वंदना करते हुए दिवाकर मेघ ने मां शारदे वर दे हमें तव स्मरण करते रहें सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। डाला गोली कांड आयोजक ने,सरहद के पहरेदारों को शत-शत मेरा प्रणाम जाये। देश खड़ा है साथ आपके ए मेरा पैगाम जाये।। ओज पूर्ण भाव देकर खूब तालियां बजवाते रहे। अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ साहित्यकार/पत्रकार मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी को अंगवस्त्र, लेखनी, पुस्तिका, प्रशस्ति पत्र, माल्यार्पण कर सारस्वत अभिनंदन किया गया। लोकभाषा के कवि दयानंद दयालू ने एक दिन पेशी होई गुरू के अदालत में रहना कौनो हालत में सुनकर लोग करुणा से ओत-प्रोत हो गये। संचालन कर रहे अशोक तिवारी ने चांदनी की जमीं पर छटा देखकर, चांद के पार हमको भी जाना पड़ा शायरी सुनाकर वाहवाही बटोरी। धर्मेश चौहान एड ने राष्ट्र को वंदन करते हुए वतन के लिए जीवन कुर्बान हो गया तो, वहीं सोन साहित्य संगम के राकेश शरण मिस्र नोटरी अधिवक्ता ने गंभीर रचना,, युद्ध युद्ध बस युद्ध छिड़ा है सुनाकर मानवता पर बल देते हुए सबको आईना दिखाया।काफी सराही गई।ओज राष्ट्र वाद के सजग प्रहरी प्रभात सिंह चंदेल ने हाथों में तिरंगा कलेजे में हिन्दुस्तान रखता हूं सुनाया और वीर रस का जज्बा जगाया। इस अवसर पर दिलीप सिंह, दीपक, जयराम सोनी, सुधाकर, स्वदेश,प्रेम आदि कवियों ने काव्य पाठ किया। अध्यक्षता कर रहे मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी ने हाय यह प्रचंड धूप सुनाकर श्रमिक की पीर को उकेरा और पूर्णता प्रदान किया तथा कवियों को आशीर्वाद दिया। आभार आयोजक प्रदुमन त्रिपाठी एड ने व्यक्त किया। इस अवसर पर रिषभ, शिवमोचन, सोनू, फारुख अली हाशमी, ठाकुर कुशवाहा, शिखा, मृत्युंजय, ममता, समता, आत्मप्रकाश तिवारी एड ,जयशंकर त्रिपाठी एड, देवानंद पांडेय एड आदि लोग मौजूद रहे।

पूर्ण बहुमत के साथ दोनों सीट जीत रहे हैं हम कार्यकर्ता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। समाजवादी पार्टी कार्यालय पर सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस करते एमएलसी आसतोष शिन्हा ने सम्बोधित करते हुए कहा

कि आज पूरे प्रदेश और देश में एक नई सरकार का गठन करने जा रही है तो इसलिए किसी भी तरह से किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो जिसके लिए मतगणना में उसको लेकर आज हम लोगों ने चंडीगढ़ में हुआ हेरा फेरी चंडीगढ़ में जिला प्रशासन डीएम के नेतृत्व में किया जा रहा था जब उसका विरोध किया गया वही गलती दुबारा ना हो जिसके लिए जिले के पदाधिकारियों के साथ सरकारी अधिकारियों पर विश्वास हमारा काम और हमारा विश्वास जनता पर हमारा विश्वास है और निर्वाचन आयोग पर हम विश्वास करते हैं तब समाजवादी पार्टी और साथ ही साथ हमारे पार्टी के नेता और कार्यकर्ताओं को हम लोग जागरुक और समझने के लिए वहां के जिला अधिकारी ने जैसा काम किया तो वैसा स्थिति यहां भी ना हो आज प्रदेश में अधिकारी भी दबाव में है और कहीं कोई अधिकारी दबाव में गलत काम ना करें और ऐसा ना करें कि सरकार के मानसा के अनुरूप जबरदस्ती कुछ गलत कर दिया और हमारे कार्यकर्ता एकदम सजक है और कल जो काउंटिंग होने जा रही है उसमें हमारे प्रत्याशी छोटेलाल खरवार और चुनाव था उसके प्रत्याशी विजय सिंह गोंड़ पुड बहुमत से चुनाव चितने जा रहे है वही श्री शिन्हा ने बताया कि आज पूरे प्रदेश में व देश में
किसान के साथ नहीं हुआ उद्योगपतियों कर्ज माफ करने का सरकार ने किया आज आप देख रहे होंगे जिस तरह से उत्तर प्रदेश महिलाओं के साथ अत्याचार हो रहा है और उसी क्रम में रावटसगंज और जो चुनाव हो रहा है लेकिन जिस तरह से देखा होगा में भाजपा प्रत्याशी जीतने के लिए अधिकारियों ने दुरुपयोग किया अपनी ताकत और सुप्रीम कोर्ट के जितने नेता है हमारे जिला अध्यक्ष हमारे पूर्व विधायक सारे लोग मिलकर आज जिल प्रशासन पर्यवेक्षक से मुलाकात करके निर्पष्ट पूर्वक मतगणना कराने को लेकर वार्ता की जाएगी अगर किसी प्रकार से सरकार के दबाव में कर्मचारी कुछ गलत करने का कार्य करेंगे तो हम एट का जवाब पत्थर से देने का कार्य कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर करेंगे इस मौके पर जिलाध्यक्ष रामनिहोर यादव पूर्व विधायक अविनाश कुशवाहा रमेश चंद्र दुबे पूर्व जिलाध्यक्ष विजय यादव संजय यादव श्यामबिहारी यादव सुनील गोड़ गीता गौर अशोक पटेल अनिल यादव आदि लोग मौजूद रहे।

अमेरिकन क्रिकेट में भी भारतीयों का दबदबा, यूएसपीएल के जरिये खिलाड़ियों को मिल रहा है नया मंच

न्यूयॉर्क। अमेरिका में टी-20 विश्व कप भले ही पहली बार हो रहा है, लेकिन यहां लीग क्रिकेट बीते दो वर्षों से हो रहा है। यूएस प्रीमियर लीग (यूएसपीएल) का तीसरा चरण इस साल नवंबर में होगा और मेजर क्रिकेट लीग का भी एक सत्र यहां हो चुका है। खास बात ये है कि अमेरिकन क्रिकेट पर भी भारत का पूरा दबदबा है। अमेरिका में टी-20 विश्व कप भले ही पहली बार हो रहा है लेकिन यहां लीग क्रिकेट बीते दो वर्षों से हो रहा है। यूएस प्रीमियर लीग (यूएसपीएल) का तीसरा चरण इस साल नवंबर में होगा और मेजर क्रिकेट लीग का भी एक सत्र यहां हो चुका है। खास बात ये है कि अमेरिकन क्रिकेट पर भी भारत का पूरा दबदबा है। यूएसपीएल के संस्थापक और चेयरमैन भारत के जयदीप सिंह हैं। जयदीप भारत में रहते हैं और एक कंपनी बनाकर उन्होंने नौ पार्टनर के साथ अमेरिका में क्रिकेट लीग के दो सफल सत्र करवा लिए हैं और तीसरे की तैयारी कर रहे हैं। जयदीप ने दैनिक जागरण से कहा कि अभी तक अमेरिका में जितनी भी लीग खेली जा रही थीं, वे सभी बेहद जमीनी स्तर की लीग थीं। किसी ने उसे एक खेल ब्रांड बनाने को लेकर सोचा नहीं था। हमारे साथ स्टार डिजनी, वायकाम व अन्य मल्टीनेशनल ब्रांड जुड़े हुए हैं। हमारे पास अमेरिका और भारत दोनों में कई साझेदार हैं। हमने अमेरिका क्रिकेट बोर्ड के साथ आईसीसी से भी अनुमति ली है। इस लीग में अमेरिका के सभी बड़े खिलाड़?यों के साथ श्रीलंका, बांग्लादेश और कुछ पूर्व भारतीय खिलाड़ी भी खेले हैं। पिछले वर्ष हमने यूरो स्पो?र्ट्स, जियो सहित कई प्रसारणकर्ताओं के साथ भारत, पाकिस्तान, कनाडा समेत कई देशों में इसको प्रसारित किया है।वायकाम

18 के प्रबंधन बोर्ड में कई वर्षों तक रहने के साथ एमटीवी का संचालन कर चुके जयदीप ने भारत में गुरुग्राम में रहने के बावजूद अमेरिका में लीग शुरू करने के सवाल पर कहा कि मैंने अमेरिका, यूरोप और मध्य पूर्व मार्केट में काफी काम किया था। दो वर्ष पूर्व मुझे यूएसपीएल शुरू करने का विचार आया, जिसके बाद मैंने अमेरिका में इसे शुरू करने का निणन्य किया। हमने मैदान की रेकी की और देखा कि इसे कैसे किया जाए। हमने पहला सत्र वेस्टर्टन काउंटी में किया। टीमें बनाई, इसमें ज्यादार खिलाड़ी अमेरिका के थे। दूसरे सत्र में हमने पांच टीमें अमेरिका और दो भारत से लीं और फ्लोरिडा में मुकाबले कराए। यहां सारे अंतरराष्ट्रीय मुकाबले होते हैं। हमारी कंपनी में कई अन्य कपनियों के सीईओ और कार्यकारी अधिकारी पार्टनर हैं।जयदीप ने कहा कि अब अमेरिका भी क्रिकेट के लिए बड़ा बाजार बनता जा रहा है, जिसका बड़ा उदाहरण है कि आइसीसी का अमेरिका को टी-20 विश्व कप की मेजबानी देना। बीते एक-दो वर्ष में आइसीसी और अमेरिक क्रिकेट बोर्ड के समर्थन से क्रिकेट का अमेरिका में जो विकास हुआ, वो दिखता है। मेजबान होने के कारण अमेरिकी टीम भी पहली बार विश्व कप खेल रही है। अगर क्रिकेट अमेरिका की मुख्य खेल धारा में घुस जाता है तो यहां विज्ञापन का बड़ा मार्केट है, जिससे क्रिकेट को वैश्विक रूप से भी काफी फायदा होगा। वहीं, जिन-जिन देशों में क्रिकेट खेला जाता है, वहां के लोग अमेरिका में बहुतायत में रहते हैं। दर्शकों के लिहाज से भी यह क्रिकेट के लिए अच्छा है।अमेरिका सहित कई देश, जहां क्रिकेट विकसित हो रहा है, वहां खिलाड़ी और उसे चलाने वाले भारतीय उपमहाद्वीप के ही हैं, इस सवाल पर जयदीप का कहना है कि जहां तक क्रिकेट के संचालन की बात है तो यह अभी थोड़ा डिवाइड हुआ है। जब से लीग बनना शुरू हुई हैं, कई नए लोग जुड़ रहे हैं। समय के साथ खेल में पेशेवर लोग जुड़ रहे हैं। जहां तक स्थानीय खिलाड़?यों की बात है तो यह स्थानीय बोर्ड पर निर्भर करता है कि वे इस पर कितना ध्यान दे रहे हैं। अमेरिका के साथ अच्छी बात है कि वहां ग्राउंड पर क्रिकेट बहुत खेला जाता है। अगर आप देखोगे तो पूरे साल क्रिकेट ग्राउंड बुक रहते हैं। यहां छोटी-छोटी लीग होती रहती हैं। जितनी छोटी छोटी लीग यहां खेली जाती हैं, उतना भारत, ऑस्ट्रेलिया कहीं नहीं खेली जातीं।अब मेजर लीग क्रिकेट और यूएसपीएल बड़ी लीग हैं, जो आने वाले समय में और भी बड़ी होंगी। मेरा मानना है कि भविष्य में अमेरिका क्रिकेट के लिए बड़ा बाजार बनने जा रहा है। अमेरिका में बढ़ रहा क्रिकेट : जयदीप ने कहा कि बीते दो तीन वर्षों मे अमेरिका का क्रिकेट काफी बढ़ा है। खिलाड़ी काफी इवाल्व हुए हैं। अमेरिका क्रिकेट बोर्ड काफी कैंप लगाता है। उनका वार्षिक कैलेंडर काफी व्यस्त रहता है। महिला क्रिकेट पर काफी काम हो रहा है। यूएसपीएल और मेजर क्रिकेट लीग से क्रिकेट का स्तर काफी ऊंचा हुआ है। अब ये निर्भर करेगा कि विश्व कप के बाद अमेरिकी क्रिकेट में कैसे निवेश आता है। हम अब क्रिकेट के साथ मनोरंजन को जोड़ेंगे, जिससे क्रिकेट को काफी मदद मिलेगी। मार्केटिंग बड़े स्तर पर करेंगे, जिससे लोग ज्यादा से ज्यादा स्टेडियम में पहुंचे। इस बार का यूएसपीएल एक महोत्सव की तरह होगा। इस वर्ष लाडरहिल में 15 नवंबर से पांच दिसंबर तक यूएसपीएल का तीसरा चरण खेला जाएगा। अगस्त में हम खिलाड़?यों की नीलामी करेंगे। इस बार आठ टीमें होंगी।

राहुल द्रविड़ ने जताई नाराजगी बांग्लादेश के खिलाफ वॉर्म-अप मैच के बाद खिलाड़ियों को दी अहम सलाह

न्यूयॉर्क। भारतीय टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने बांग्लादेश के विरुद्ध अभ्यास मैच के बाद कहा कि पिच नरम और मुलायम थी। इसलिए खिलाड़?यों को थोड़ी मांसपेशियों और पिंडलियों पर इसका असर महसूस हो सकता है। द्रविड़ ने बीसीसीआई टीवी से कहा, ''बेशक, यह एक अच्छे मैदान की तरह दिखता है। मैदान थोड़ा नरम अच्छी तरह निपटे। बल्लेबाजों ने उस विकेट पर अच्छा स्कोर बनाया और गेंदबाजों ने भी काफी अच्छी गेंदबाजी की।'' वहीं, कप्तान रोहित शर्मा ने

सावधानी बरतनी चाहिए। भारतीय टीम के हेड कोच राहुल द्रविड़ ने बांग?लादेश के खिलाफ वॉर्म-अप मैच के बाद पिच को लेकर नाराजगी जताई। द्रविड़ ने कहा कि पिच नरम और मुलायम थी। उन?होंने कहा कि खिलाड़?यों को थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। द्रविड़ ने कहा कि मैदान थोड़ा नरम है और खिलाड़?यों को पैर की है और खिलाड़?यों को पैर की मांसपेशियों और पिंडलियों पर इसका असर महसूस हो सकता है। इसलिए हमें इस क्षेत्र पर काम करने की आवश्यकता है और यह सुनिश्चित करना है कि खिलाड़ी इस बात का ध्यान रखें कि भारीपन महसूस नहीं हो।'' द्रविड़ ने कहा, ''पिच थोड़ी नरम थी, लेकिन मुझे लगता है कि हम इससे काफी अभ्यास मैच में जीत के बाद कहा, ''अभी हमने बल्लेबाजी क्रम को अंतिम रूप नहीं दिया है। ऋषभ पंत को तीसरे नंबर पर भेजने पर रोहित ने कहा कि सिर्फ उसे मौका देने के लिए ऐसा किया। नया स्थल, नया मैदान, ड्रॉप-इन पिच हमें इनसे अनुकूल होना महत्वपूर्ण था और हमने काफी अच्छा प्रदर्शन किया।'

ओपनिंग सेरेमनी में दिखा विंडीज का असली रंग, दिग्गजों ने बांधा समां

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। क्रिकेट की दुनिया का ध्यान इस समय पूरी तरह से वेस्टइंडीज और अमेरिका की तरफ है जहां टी20 वर्ल्ड कप खेला जा रहा है। इस वर्ल्ड कप का आयोजन में ये टूर्नामेंट खेला गया था। पहले मैच में वेस्टइंडीज का सामना पीएनजी से हुआ और इस मैच से पहले ओपनिंग सेरेमनी आयोजित की गई। गयाना के प्रोविडेंस स्टेडियम में ये ओपनिंग सेरेमनी इसके अलावा आतिशबाजी भी जमकर हुई। इस टूर्नामेंट में 20 टीमें हिस्सा ले रही हैं और सभी देशों के झंडे इस ओपनिंग सेरेमनी में दिखाई दिए। साल 2021 में ऑस्ट्रेलिया को पहला टी20 वर्ल्ड

दो देशों में किया जा रहा है। मेजबान वेस्टइंडीज की टीम ने अपना पहला मैच रविवार को पापुआ न्यू गिनी के खिलाफ खेला और इससे पहले टूर्नामेंट की ओपनिंग सेरेमनी का आयोजन किया गया। गयाना के प्रोविडेंस स्टेडियम में ये ओपनिंग सेरेमनी हुई जिसमें वेस्टइंडीज के कल्चर की झलक देखने को मिली। इस सेरेमी में दिग्गजों ने परफॉर्म किया। वेस्टइंडीज दूसरी बार टी20 वर्ल्ड कप का आयोजन कर रहा है। इससे पहले यहां 2010 हुई जिसमें वेस्टइंडीज के कल्चर की झलक देखने को मिली। इस सेरेमी में दिग्गजों ने परफॉर्म किया। वेस्टइंडीज दूसरी बार टी20 वर्ल्ड कप का आयोजन कर रहा है। इससे पहले यहां 2010 में ये टूर्नामेंट खेला गया था। आईसीसी ने पहले ही बता दिया था कि डेविड रडर, रवी बी, एरफान एल्वेस और डीजे एना और अल्ट्रा इसमें हिस्सा लेंगे। इन सभी को देख दर्शक झूम उठे और उनसे परफॉर्मेंस पर पूरा स्टेडियम जशन में डूब गया। इन लोगों के परफॉर्मेंस ने जमकर माहौल बनाया। कर जिताने वाले एरॉन फिंच ने वर्ल्ड कप की ट्रॉफी लेकर मैदान पर आए। वेस्टइंडीज वो टीम है जिसने दो बार टी20 वर्ल्ड कप जीता है। इस बार ये टीम अपने घर में खेल रही है और काफी मजबूत मानी जा रही है। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि वेस्टइंडीज तीसरी बार ये खिताब अपने नाम कर लेगा। उसे हालांकि भारत, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया से कड़ी चुनौती मिलने की उम्मीद है। पिछले टी20 वर्ल्ड कप में वेस्टइंडीज की टीम मुख्य दौर में क्वालिफाई तक नहीं कर पाई थी।

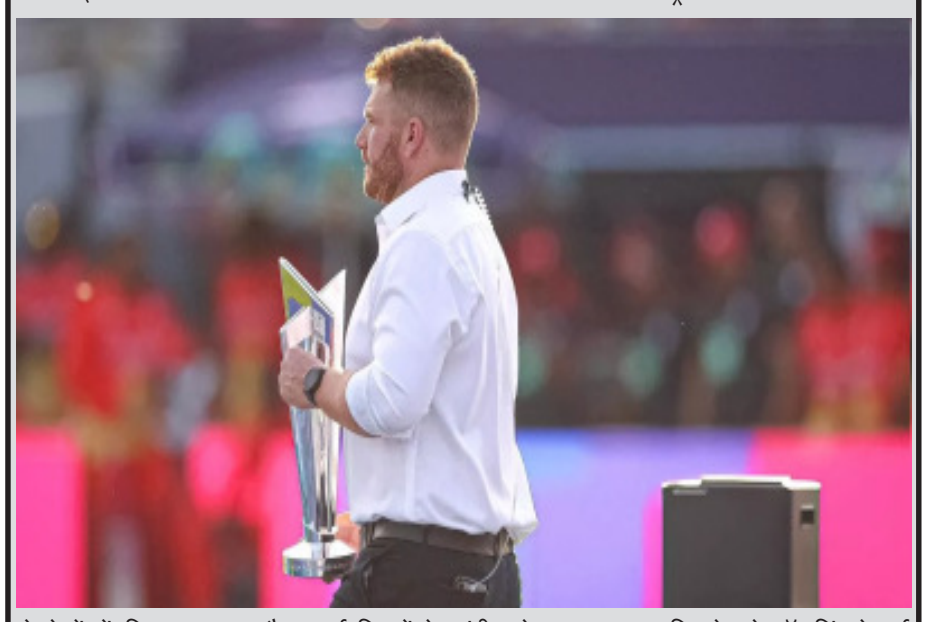

टी20 विश्व कप 2024 में भारत की जीत से क्या सबक मिले आईआरई के खिलाफ रोहित ब्रिगेड को रहना होगा चौकन्ना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली।टी20 विश्व कप 2024 में अपने पहले मुकाबले से पहले बांग्लादेश को वार्म-अप मैच में 60 रन से मात दी। इस मैच में भारतीय टीम ने पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में पांच विकेट खोकर 182 मैच से पहले कुछ खास बातों का ध्यान रखना होगा। आइए जानते हैं इन प्वाइंट्स को टी20 विश्व कप 2024 में वार्म-अप मैच में देखा गया कि भारतीय टीम के गेंदबाज अर्शदीप सिंह और शिवम दुबे ने शुरुआत में जल्दी विकेट दिला दिए

रन का स्कोर खड़ा किया। इसके जवाब में बांग्लादेश की टीम 20 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 121 रन ही बना सकी। टी20 विश्व कप 2024 में अपने पहले मुकाबले से पहले बांग्लादेश को वार्म-अप मैच में 60 रन से मात दी। इस मैच में भारतीय टीम ने पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में पांच विकेट खोकर 182 रन का स्कोर खड़ा किया। इसके जवाब में बांग्लादेश की टीम 20 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 121 रन ही बना सकी। भारत के लिए अर्शदीप सिंह और शिवम दुबे ने दो-दो विकेट चटकाए। टीम इंडिया के बैटर्स और गेंदबाज का प्रदर्शन अच्छा रहा, लेकिन आयरलैंड के खिलाफ खेले जाने वाले पहले मैच को लेकर टीम इंडिया को सावधानी बर्तनी होगी। टीम इंडिया को आयरलैंड के खिलाफ थे, लेकिन इसके बाद टीम को इसके बाद काफी देर में विकेट मिला। इस तरह भारतीय टीम का मोमेंटम डगमगा गया। अब आयरलैंड के खिलाफ अगर टीम इंडिया को जीत हासिल करनी है तो उसे मोमेंटम बनाए रखना होगा। भारतीय टीम ने बांग्लादेश के खिलाफ वार्म-अप मैच में अपने शुरुआती विकेट जल्दी गंवा दिए थे, लेकिन आयरलैंड के खिलाफ ओपनिंग मैच में टीम इंडिया को इस गलती से बचकर रहना होगा। ओपनिंग जोड़ी अगर ज्यादा देर तक क्रीज पर डटे रहती है तो टीम को एक मजबूती मिलती है।

श्रीलंका और साउथ अफ्रीका के बीच भिड़ंत आज, इन प्लेयर्स को मिल सकता है प्लेइंग-11 में मौका

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। श्रीलंकाई टीम ने टी20 विश्व कप का एकमात्र खिताब साल 2014 में जीता था, जहां उन्होंने फाइनल में भारतीय टीम को हराकर ये ट्रॉफी उठाई थी। वहीं, साउथ अफ्रीका की टीम ने अभी तक एक

बार भी टी20 विश्व कप का खिताब नहीं जीता। दोनों टीमों को ग्रुप-डी में बांग्लादेश, नेपाल और नीदरलैंड्स के साथ रखा गया है। टी20 वर्ल्ड कप 2024 का चौथा मैच आज 3 जून को श्रीलंका और दक्षिण अफ्रीका के बीच खेला जाना है। दोनों टीमों के बीच ये मैच न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। बता दें कि श्रीलंकाई टीम ने साल 2014 में टी20 विश्व कप जीता था और इसके बाद वह अपनी अगली ट्रॉफी उठाने के सबसे करीब 2015 विश्व कप क्वार्टर फाइनल में पहुंची थी। श्रीलंकाई टीम इतिहास दोहराने के इरादे के इस मेगा इवेंट में शानदार प्रदर्शन करना चाहेगी, जबकि अफ्रीका की टीम अपने नाम से चोकर्स का टैग हटाना चाहेगी। दोनों टीमों में काफी शानदार और मैच विनिंग खिलाड़ी है, जो उन्हें आईसीसी का ये खिताब जिताने में मदद करेंगे। ऐसे में जानते है साउथ अफ्रीका बनाम श्रीलंका के बीच खेले जाने वाले टी20 विश्व कप 2024 के चौथे मैच की संभावित प्लेइंग-11 कैसी हो सकती है। टी20 वर्ल्ड कप 2024 का चौथा मैच आज 3 जून को श्रीलंका और दक्षिण अफ्रीका के बीच खेला जाना है। दोनों टीमों के बीच ये मैच न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। बता दें कि श्रीलंकाई टीम ने साल 2014 में टी20 विश्व कप जीता था और इसके बाद वह अपनी अगली ट्रॉफी उठाने के सबसे करीब 2015 विश्व कप क्वार्टर फाइनल में पहुंची थी। उस टूर्नामेंट से जिस टीम ने उसे बाहर किया था वो और कोई नहीं दक्षिण अफ्रीका की टीम ही थी। वहीं, श्रीलंका ने 1996 का विश्व कप भी जीता था, लेकिन 2014 की अंडर-19 जीत दक्षिण अफ्रीका की एकमात्र जीत है। बता दें कि वानिंदु हसरंगा चोट से उबरकर आ रहे है और इसके बाद ही उन्हें टीम की कमान सौंपी गई। उनके गेंदबाजी आक्रमण में मथीशा पथिराना, महेश थीक्षाना, दुष्मंथा चमीरा, दिलशान मदुशंका और नुवान तुसारा शामिल हैं। आईपीएल में अच्छा प्रदर्शन करने वाले पथिराना से उम्मीद की जा रही है कि वह न्यूयॉर्क में भी अपनी लय बरकरार रखे। वहीं, दूसरी तरफ दक्षिण अफ्रीका के पास क्विंटन डी कॉक, एडेन मार्कराम, हेनरिक क्लासेन, डेविड मिलर और मार्को जानसन जैसे अनुभवी बल्लेबाज हैं। युवा ऑलराउंडर ट्रिस्टन स्टब्स, एनरिक नॉर्टजे, गेराल्ड कोएत्ज़ी और ब्योर्न फोर्टुइन ताकत जोड़ते हैं। कगिसो रबाडा और केशव महाराज उनके गेंदबाजी आक्रमण का नेतृत्व करेंगे। श्रीलंका- पथुम निसांका, कुसल मेंडिस, कामिंडु मेंडिस, धनंजय डी सिल्वा, चरिथ असलांका, वनिंडु हसरंगा (कप्तान), एंजेलो मैथ्यूज, दासुन शनाका, महेश थीक्षाना, मथीशा पथिराना, दिलशान मदुशंका। दक्षिण अफ्रीका- क्विंटन डी कॉक, रीजा हेंड्रिक्स, रयान रिकेल्टन, एडेन मार्कराम (कप्तान), डेविड मिलर, हेनरिक क्लासेन, ट्रिस्टन स्टब्स, केशव महाराज, कागिसो रबाडा, एनरिक नॉर्टजे, तबरेज़ शम्सी।

इस सप्ताह की शुरुआत प्रसन्नता के साथ होगी। लेकिन बातचीत में संवत रहें। शिक्षा से जुड़े काम पर ध्यान देने की आवश्यकता है। धैर्य रखना होगा। भागदौड़ बनी रहेगी।

इस सप्ताह आत्म संवत रहने की आवश्यकता है। मन परेशान रहेगा। गुस्सा पर नियंत्रण रखना होगा। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के

मन में आशा-निराशा बनी रहेगी। नकारात्मक विचारों से बचें। स्वास्थ्य का ध्यान रखने की आवश्यकता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। नौकरी में कार्यभार में बढ़ोतरी

सप्ताह के शुरूआत से वाणी में मधुरता रहेगी, लेकिन धैर्यशीलता बनाए रखने की कोशिश करें। शिक्षा से जुड़े कामों में सफलता मिलेगी। संतान के स्वास्थ्य का ध्यान रखना

सप्ताह के पहले दिन से मन में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। नौकरी में तरक्की मिलने की संभावना है। शासन सत्ता का योग बन रहा है। भवन सुख मिलेगा। शिक्षा से जुड़े काम में

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में मेहनत ज्यादा होगी। परिवार की जिम्मेदारी बढ़ेगी। नौकरी में कार्यभार बढ़ेगा। मन परेशान हो सकता है। स्वभाव में

नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा, स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। वाणी में कठोरता का भाव रहेगा, बातचीत में संयत रहें। वस्त्रों

इस सप्ताह परिवार के साथ धार्मिक यात्रा के योग बन रहे हैं। माता का सहयोग भी प्राप्त होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। ज्यादा उत्साही होने से बचें।

नौकरी में तरक्की होने की संभावना है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव बना रहेगा। मानसिक शांति रहेगी। गुस्सा पर काबू रखें।

परिवार में हंसी-खुशी का माहौल रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। नकारात्मक विचारों से बचाव

मन खुश रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिंक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।

पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ सकती हैं। मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

रुबेन ट्रंपलमैन ने टी20 वर्ल्ड कप में मचाई तबाही, ओमान के खिलाफ पहली दो गेंदों में दो विकेट लेकर रचा इतिहास

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। किसी गेंदबाज के लिए इससे बढ़िया शुरुआत क्या होगी कि पहले मैच में पहले ओवर की पहली दो गेंदों पर दो विकेट मिल जाएं। ऐसा ही कुछ कमाल नामीबिया के तेज गेंदबाज रुबेन ट्रंपलमैन ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 के तीसरे मैच में ओमान के खिलाफ करके दिखाया है।नामीबिया के तेज गेंदबाज रुबेन ट्रंपलमैन ने सोमवार को टी20 वल्ड कप 2024 के तीसरे मैच में ओमान के खिलाफ शुरुआती दो गेंदों में दो विकेट चटकाकर इतिहास रच दिया। ट्रंपलमैन टी20 इंटरनेशनल मैच में शुरुआती दो गेंदों में दो विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बन गए हैं। ट्रंपलमैन ने ओमान के ओपनर कश्यप प्रजापति और कप्तान आकिब इलियास को अपना शिकार बनाया जी हां, रुबेन ट्रंपलमैन ने सोमवार को पारी की शुरुआती दो गेंदों में दो विकेट लेकर इतिहास रच दिया। ट्रंपलमैन टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में मैच की पहली दो गेंदों पर दो विकेट लेने वाले दुनिया के पहले गेंदबाज बन गए हैं। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने ओमान के ओपनर कश्यप प्रजापति और कप्तान आकिब इलियास को अपना शिकार बनाया। दोनों को ट्रंपलमैन ने एलबीडब्ल्यू आउट किया। वैसे, रुबेन ट्रंपलमैन दुनिया के सातवें

गेंदबाज हैं, जिन्होंने शुरुआती दो गेंदों में दो विकेट झटके हैं। मगर बड़ी बात यह है कि अन्य पांच गेंदबाजों ने दूसरी पारी में पहली दो गेंदों में दो विकेट लेने का कमाल किया है। वहीं, रुबेन ट्रंपलमैन ने मैच की पहली दो गेंदों में दो विकेट लेने का कारनामा किया। टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे पहले श्रीलंका के पूर्व तेज गेंदबाज नुवान कुलसेकरा ने पहली दो गेंदों में दो विकेट लेने का कमाल किया था। उन्होंने 2012 में पाकिस्तान के खिलाफ ऐसा कारनामा किया था। इसके बाद आयरलैंड के मैक्स सोरेनसेन ने कनाडा के खिलाफ पहली दो गेंदों में दो विकेट झटके थे। फिर 2022 में नीदरलैंड्स के फ्रेड क्लासेन (बनाम युगांडा), इंग्लैंड के क्रिस वोक्स (बनाम ऑस्ट्रेलिया) और बांग्लादेश के तास्किन अहमद (बनाम नीदरलैंड्स) ने यह कमाल किया। 2024 में कुवैत के शाहरुख कुद्दुस ने यूएई के खिलाफ शुरुआती दो गेंदों में दो विकेट झटके। रुबेन ट्रंपलमैन का जलवा पहले भी दुनिया देख चुकी है। वह टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में अकेले ऐसे गेंदबाज हैं, जिन्होंने पहली दो गेंदों में दो विकेट झटके। इसके अलावा शुरुआती चार गेंदों में तीन विकेट भी वो ले चुके हैं। ट्रंपलमैन ने 2021 में स्कॉटलैंड के खिलाफ पहली चार गेंदों में तीन विकेट झटके थे। रुबेन ट्रंपलमैन ने ओमान के खिलाफ घातक गेंदबाजी स्पेल डाला। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने ओमान के खिलाफ 4 ओवर के अपने स्पेल में 21 रन देकर चार विकेट झटके। ट्रंपलमैन ने कश्यप प्रजापति, आकिब इलियास, नसीम खुशी और कलीमुल्लाह को अपना शिकार बनाया। वह टीम के लिए स्टार शो करने वाले गेंदबाज रहे। इसके अलावा डेविड वीज ने तीन विकेट झटके। रुबेन ट्रंपलमैन के शुरुआती झटकों से ओमान की टीम अंत तक नहीं उबर सकी और पूरी टीम 19.4 ओवर में 109 रन पर ऑलआउट हो गई। रुबेन ट्रंपलमैन के अलावा डेविड वीज ने 3.4 ओवर में 28 रन देकर तीन विकेट झटके। कप्तान गरहार्ड इरासमस ने दो विकेट चटकाए। बाएं हाथ के स्पिनर बर्नाड शोल्ट्ज के खाते में एक विकेट आया।

सम्पादकीय

मुस्लिम समाज की समस्याओं से इन्कार नहीं, 'गंभीर' रोग के खतरनाक उपचार की कोशिश में विपक्षी नेता

प्रधानमंत्री मोदी ने मुस्लिम आरक्षण की सांविधानिक वैधता पर जो आशंका व्यक्त की थी, कलकत्ता उच्च न्यायालय ने उस पर मुहर लगाई है। मुस्लिम समाज में व्याप्त समस्याओं से इन्कार नहीं, लेकिन ममता, राहुल और लालू सरीखे जिस तरह इसका उपचार कर रहे हैं, वह विकराल बीमारियों को ही पैदा करेगा। लोकसभा चुनाव अभियान के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुस्लिम आरक्षण की सांविधानिक वैधता पर जो आशंका व्यक्त कर रहे हैं, उस पर कलकत्ता उच्च न्यायालय ने मुहर लगा दी। 22 मई को अदालत ने पश्चिम बंगाल में वर्ष 2010 के बाद मुस्लिमों को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) आरक्षण के तहत जारी प्रमाणपत्रों को असांविधानिक बताकर रद्द कर दिया। यह पहली बार नहीं है, जब किसी राजनीतिक दल ने स्थापित आरक्षण व्यवस्था में डाका डालकर सभी मुसलमानों को गरीब-वंचित बताकर अवैध आरक्षण देने का प्रयास किया है। आखिर बार-बार ऐसी कोशिशें क्यों हो रही हैं? इसका उत्तर न्यायमूर्ति तपब्रत चक्रवर्ती और न्यायाधीश राजशेखर मंथा की खंडपीठ द्वारा व्यक्त टिप्पणी में मिल जाता है। उनके अनुसार, 'मुसलमानों के कुछ वर्गों को 'राजनीतिक उद्देश्यों के लिए' ओबीसी आरक्षण दिया गया। जिन मुस्लिम वर्गों को आरक्षण दिया गया, उन्हें राज्य की सत्तारूढ़ व्यवस्था ने एक वस्तु और 'वोटबैंक' के रूप में इस्तेमाल किया। यह संविधान और लोकतंत्र का अपमान है।' इस निष्कर्ष को प्रदेश की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी ने मानने से इन्कार कर दिया है। आखिर इसका कारण क्या है? पश्चिम बंगाल की वर्तमान आबादी 10 करोड़ से अधिक है, जिसमें सात करोड़ हिंदू और 2.7 करोड़ मुसलमान हैं। लोकनीति-सीएसडीएस के अनुसार, 2021 के विधानसभा चुनाव में 75 प्रतिशत मुस्लिम मतदाताओं ने तृणमूल के पक्ष में मतदान किया था, जो 2016 में 51 प्रतिशत था। यहां की 42 लोकसभा सीटों में से 13 में मुस्लिम आबादी 32-64 प्रतिशत तक है, जबकि 20 सीटों पर हिंदुओं की आबादी 35-50 प्रतिशत है। विभाजन के बाद पश्चिम बंगाल में मुसलमानों की आबादी तेजी से बढ़ रही है। 1951 की जनगणना में प्रदेश की कुल जनसंख्या 2.63 करोड़ थी, जिसमें मुस्लिम 50 लाख, यानी 19 प्रतिशत थे। वर्ष 2011 की जनगणना में उनकी आबादी बढ़कर ढाई करोड़ से अधिक, यानी 27 प्रतिशत हो गई। वर्तमान आंकड़ा वर्ष 1941 में संयुक्त बंगाल की मुस्लिम आबादी–29.5 प्रतिशत के काफी निकट है। यहां अविभाजित बंगाल में वर्ष 1946 के प्रांतीय चुनाव का स्मरण करना आवश्यक है, क्योंकि तब इस क्षेत्र के 95 प्रतिशत मुस्लिम मतदाताओं ने मुस्लिम लीग को वोट देकर पाकिस्तान का समर्थन किया था। तब केवल बंगाल ही नहीं, देश के तत्कालीन प्रांतों (असम, बिहार, उत्तर प्रदेश, बॉम्बे, पंजाब, ओडिशा, मद्रास सहित), जो आज खंडित भारत का हिस्सा है, वहां भी 80 से 100 प्रतिशत मुस्लिमों ने मुस्लिम लीग का साथ दिया था। इस पूरे प्रपंच में वामपंथियों और ब्रितानियों की बड़ी भूमिका रही थी। भारत के विभाजन का आधार तथाकथित सामाजिक-आर्थिक शोषण नहीं, अपितु सर सैयद अहमद खां द्वारा प्रदत्त और 'काफिर-कुफ्र' अवधारणा से प्रेरित 'दो राष्ट्र सिद्धांत' था। इसमें मजहबी कारणों से हिंदुओं के साथ मुस्लिमों के 'सह-अस्तित्व' को असंभव और अकल्पनीय बताया गया था। दिलचस्प है कि जो मुस्लिम नेता इसका समर्थन करते थे, उनमें से कई विभाजन के बाद कभी देश छोड़कर ही नहीं गए और कांग्रेस में शामिल होकर एकाएक 'सेक्यूलर' बन गए। इन्हीं में से 28 मुस्लिम नेता भारतीय संविधान सभा के सदस्य भी बन गए। इसी मुस्लिम समूह की ओर से जब खंडित भारत में मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग हुई, तब सरदार पटेल ने 28 अगस्त, 1947 को कहा था, 'यदि वही ढंग फिर अपनाया गया, जो देश विभाजन के लिए अपनाया गया था, तो मैं यह कहूंगा... उनके लिए यहां कोई जगह नहीं।' मुस्लिम वोटबैंक के लिए स्वघोषित सेक्यूलर दलों द्वारा कट्टरपंथी मुसलमानों को तुष्ट करना कितना घातक है, यह गांधीजी द्वारा खिलाफत आंदोलन का समर्थन किए जाने से स्पष्ट है। तब मजहबी कारणों से अधिकांश मुसलमान स्वतंत्रता आंदोलन से कटे हुए थे। उन्हें ब्रितानियों के खिलाफ एकजुट करने हेतु गांधीजी ने उस घोर मजहबी और कट्टरपंथी खिलाफत आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसका भारतीय मुस्लिमों से कोई संबंध नहीं था। गांधीजी की सोच थी कि इससे राष्ट्रीय एकता और स्वराज्य को बल मिलेगा। परंतु मुस्लिम कट्टरपंथियों ने इसे भारत में इस्लामी वर्चस्व की पुनर्वापसी का उपक्रम बना लिया। अंततोगत्वा, पाकिस्तान का जन्म हुआ। क्या स्वतंत्रता के बाद खंडित भारत में इस मजहबी तुष्टीकरण पर लगाम लगी? नहीं। जब सामाजिक सुधार हेतु 1955-56 में हिंदू कोड बिल लाया गया, तब मुस्लिम समुदाय को उनकी मजहबी मान्यताओं (हलाला-तीन तलाक सहित) के साथ छोड़ दिया गया। जब 1985-86 में सर्वोच्च न्यायालय ने शाहबानो मामले में मुस्लिम महिलाओं को मध्यकालीन मानसिकता से बाहर निकालने वाला फैसला सुनाया, तब कट्टरपंथियों के हिंसक प्रदर्शन और 'इस्लाम खतरे में है' के उद्घोष के आगे नतमस्तक होते हुए तत्कालीन राजीव सरकार ने संसद में बहुमत के बल पर अदालत का निर्णय पलट दिया। वर्ष 2006 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने बड़ी चतुराई से राष्ट्रीय संसाधनों पर मुसलमानों का पहला हक बता दिया।

19 पड़ोसियों को चुनौती देने की हठधर्मिता, राष्ट्रपति जिनपिंग का अहंकार जिम्मेदार

राष्ट्रपति शी जिनपिंग की हठधर्मिता के कारण चीन पड़ोसी देशों के लिए बड़ी चुनौती है। साइबर दुनिया में चीन की साजिशें अक्सर चर्चा में रहती हैं। उसके योजनाकार भारत के खिलाफ साजिश रचने पर काफी समय खर्च करते हैं।कुछ स्वयंभू 'विशेषज्ञ' बता रहे हैं कि चीन महाशक्ति देश के रूप में अमेरिका की जगह लेना चाह रहा है, इसलिए उसके पास भारत के खिलाफ षड्यंत्र रचने का समय नहीं है। यह सरासर बकवास है। चीन यह बात अच्छी तरह से समझता है कि भारत को कमजोर किए बिना दुनिया पर वर्चस्व कायम करने की उसकी मंशा कभी पूरी नहीं हो सकती है। इसलिए सैन्य से लेकर आर्थिक और मानचित्रण तक-वह भारत के खिलाफ हर तरह की आक्रामकता आजमाने का प्रयास करता है। उसके योजनाकार भारत के खिलाफ साजिश रचने पर काफी समय खर्च करते हैं। चीन की 'तीन युद्ध' रणनीति का काफी विश्लेषण किया गया है, जो झाउ वंश के रणनीतिकार सन त्जु की पुस्तक द आर्ट ऑफ वार से प्रेरित थी, खासकर बिना लड़े जीतने की उसकी अवधारणा, क्योंकि वह चीनियों की सीमित शारीरिक क्षमता से वाकिफ थे। चीन अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को कमजोर करना, सीमाओं को बदलना और वैश्विक (खासकर सोशल) मीडिया को नष्ट करना चाहता है। उसके पास सूचनाओं में हेरफेर करने वाली एक सेना है, और वह जहां तक संभव हो सके, अपने विरोधियों को भ्रमित करने के लिए उसका उपयोग करने की कोशिश करता है। आजकल एल्गोरिदम एवं बॉट्स के साथ सोशल मीडिया में हेरफेर करना अपेक्षाकृत आसान हो गया है, जो इंटरनेट पर स्वचालित ढंग से असीमित 'व्यूज' और 'लाइक्स' पैदा कर सकते हैं, जिन्हें मानव गतिविधियों की तरह तैयार किया गया है। मौजूदा लोकसभा चुनाव के दौरान भी ऐसा देखने को मिला है। वर्तमान सरकार के कुछ विदेश-

समर्थित सोशल मीडिया आलोचक हैं, जिनके 'आधिकारिक' रूप से लाखों फॉलोअर्स हैं। चीन ने सोशल मीडिया के जरिये ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और अमेरिका में चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश की है। लेकिन वह पकड़ा गया और उसने आहत होने का नाटक किया। मेटा जैसी दिग्गज सोशल मीडिया कंपनी के सतर्क होने और दुर्भावनापूर्ण खातों को निष्क्रिय करने के बाद चीन (और उसका अनुयायी पाकिस्तान) सोशल मीडिया का दुरुपयोग करने वाले प्रमुख देश के रूप में उभरा है। यानी सोशल मीडिया को चीन ने पूरी तरह से एंटी-सोशल (असामाजिक) बना दिया। वर्ष 2020 में गलवान की घटना (जो चीन की भयंकर भूल थी) के बाद उसकी चर्चित सेना पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलएल) का एक छोटा-सा वर्ग है, जो भारत को अस्थिर करने के बारे में सोच रहा है। अपने पुराने पिछलग्गू पाकिस्तान के उकसावे में आकर चीन ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के बाद यही घिसी-पिटी रणनीति अपनाई। लेकिन कश्मीर में जब उसकी दाल नहीं गली और कश्मीर के लोगों को राष्ट्रीय मुख्यधारा में जुड़ने के आर्थिक और राजनीतिक लाभ दिखने लगे, तो चीन ने अपना ध्यान विदेश में बसे कट्टरपंथी सिखों की तरफ लगाया। उसकी यह साजिश भी विफल होने वाली है, क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था आसमान छू रही है और दुनिया भारत के साथ दोस्ती के फायदे समझ रही है। पिछले पांच वर्षों में चीन ने भारत पर काफी आर्थिक दबाव बनाया, उसके बावजूद महामारी पर काबू पाने में हमारी सफलता और आर्थिक सुधार से चीन चिंतित हो उठा है। हालांकि भारत और चीन के बीच खुले युद्ध की फिलहाल कोई आशंका नहीं है, लेकिन वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर छिटपुट झड़पों और कभी-कभार जमीन हड़पने के प्रयासों से इन्कार नहीं कर सकते। चीनी राजनयिकों ने स्पष्ट धमकियां देने की रणनीति अपनाने की कोशिश की और मेजबान देशों को नाराज किया, जिससे चीन की छवि को नुकसान ही पहुंचा। पूर्व मंगोलियाई राष्ट्रपति, जो शी से 30 बार मिल चुके हैं, ने लिखा कि शी दिखाते हैं कि 'व्यक्तिगत रूप से करिश्माई होने के साथ विश्व मंच पर खतरनाक और निरंकुश होना संभव है। वह दुष्ट भी हो सकते हैं।' अपने सभी 19 पड़ोसियों को चुनौती देने की हठधर्मिता की चीन भारी कीमत चुका रहा है, जिसके लिए उसके राष्ट्रपति का अहंकार जिम्मेदार है।

दुनिया की सबसे चमत्कारी औद्योगिक क्रांति है रेलवे

पूरी दुनिया में रेलवे सरकारों की सबसे बड़ी चुनौती है। निजी कंपनियों का संसार आकाश से पाताल तक फैल गया है। मगर सरकारें उन्हें रेलवे में निवेश को राजी नहीं कर पातीं। रेलवे दुनिया की सबसे चमत्कारी औद्योगिक क्रांति थी, मगर यह आर्थिक तौर पर सबसे अभिशप्त कारोबार भी है।1920 में सर विलियम एकवर्थ की अगुआई में एक कमीशन बना और इसकी सिफारिश पर 1924 में रेलवे के बजट को सरकार के बजट से अलग कर दिया गया। निजी रेल कंपनियों का सरकारीकरण हो गया। आजादी के बाद भारत की निजी रेलवे पूरी तरह सरकारी हो गई। 2017 में रेलवे बजट आम बजट का हिस्सा बन गया। अब फिर भारतीय रेलवे के निजीकरण की कोशिश शुरू हो रही है। भारत में चुनावी चकल्लस के बीच जनता को यह पता नहीं चला कि भारतीय रेल यात्री किराये की कमाई में पिछड़ गई है। रेलवे का पैसेंजर राजस्व बीते साल में उस गति से भी नहीं बढ़ा, जिस रफ्तार से भारत की जीडीपी (महंगाई सहित यानी नॉमिनल) बढ़ी है। वंदे भारत ट्रेनों को कामयाब बनाने के लिए बीते साल किराये भी घटाए गए थे, मगर रेलवे को महंगे टिकट लेने वाले यात्री नहीं मिल रहे। दिसंबर, 2021 में भारत सरकार ने निजी ट्रेनें चलाने की योजना रोक दी थी। 30,000 करोड़ का टेंडर लौट गया। यह भारत में रेलवे के निजीकरण की पहली सबसे महत्वाकांक्षी कोशिश थी, रूट तय हो गए थे। निजी कंपनियां और सरकार के बीच कमाई के बंटवारे का फॉर्मूला बन गया, मगर कंपनियों ने भारत के सबसे बड़े ट्रांसपोर्टर यानी रेलवे में दिलचस्पी ही नहीं ली। वर्ष 2022 में सरकार ने रेलवे की संपत्तियां बेचने की कोशिश की। कोई ग्राहक नहीं आया। रेलवे के कुछ विभाग और प्रतिष्ठान बंद करने की तैयारी है, घाटा कम करने या नए संसाधन जुटाने की हर जुगत औंधे मुंह गिर पड़ी। बीते एक दशक में रेलवे बजट खत्म करने से लेकर निजीकरण तक, तमाम कोशिशों के बाद भी इस महाकाय गतिमान बुनियादी ढांचे की बैसाखियां हटती ही नहीं। रेलवे के घाटे का दुख दूर ही नहीं होता। अलबत्ता भारत अकेला नहीं है। पूरी दुनिया में रेल सरकारों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। निजी कंपनियों का संसार आकाश से पाताल तक फैल गया है। मगर सरकारें उन्हें रेलवे में निवेश के लिए राजी नहीं कर पातीं। रेलवे दुनिया की सबसे चमत्कारी औद्योगिक क्रांति थी, मगर यह आर्थिक तौर पर सबसे अभिशप्त कारोबार भी है। आइए, टाइम मशीन में विराजिए। चलते हैं करीब 200 साल पीछे रेलवे के चमत्कारी दिनों में... आपको अपनी सीट पर एक उपन्यास रखा मिला होगा। जब तक हम उड़ान भरते हैं, आप इसका आनंद लीजिए। स्कॉटिश कवि और व्यंग्यकार डब्लयू. ई. आइटन का यह व्यंग्य उपन्यास 1845 में आया था। इसका शीर्षक है-हाउ वी गॉट अप द ग्लूनमचकिन रेलवे? हम यूरोपीय इतिहास के जिस युग में जा रहे हैं, वह रेलवे बबल यानी रेलवे में भारी निवेश और नुकसान का दौर है। यह उपन्यास उस वक्त का प्रतिनिधि दस्तावेज माना जाता है। यह भीड़ देख रहे हैं। यह दुनिया के इतिहास के सबसे अनोखे मोड़ का गवाह बन रही है। यह 1830 है। ब्रिटेन में मैनचेस्टर और लिवरपूल के बीच यात्री ट्रेन चलाई जा रही है। इस ट्रेन के आने से पहले तक लोग घोड़ों वाली बग्घी पर यात्रा करते थे। पहली यात्री रेल खूब कामयाब हुई। उद्योगपतियों ने रेलवे में पूंजी झोंकनी शुरू कर दी है। ब्रिटेन की सरकार ने एक साथ 3,000 से अधिक रेल लाइनों को मंजूरी दे दी है। ब्रिटेन की आर्थिक हवा रेल क्रांति के किस्सों से महक रही है। निजी कंपनियां और बैंक रेलवे में निवेश का कोई मौका नहीं चूकना चाहते। आप 21वीं सदी से आए हैं, तो आपको उस तरह के अंधे निवेश में खतरों का एहसास है।

कान्स ने खोले सफलता के द्वार; अब लोगों की बन रही नैन्सी

नैन्सी ने कान्स में गुलाबी रंग का जो गाउन पहना, उसे उसने खुद सिला था। इसमें एक हजार मीटर कपड़ा और बनाने में एक महीना लगा। जिस कान्स में बड़ी-बड़ी सेलिब्रिटीज दुनिया के मशहूर डिजाइनर्स के बेहद महंगे कपड़े पहनती हैं, वहां नैन्सी ने खुद का सिला गाउन पहनकर सबको चकित कर दिया। मशहूर अभिनेत्री सोनम कपूर ने कहा कि वह उसके लिए भी कपड़े सिले।फ्रांस में हुआ कान्स फिल्म फेस्टिवल इस बार इसलिए बेहद खास रहा कि इसमें उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के गांव बरनावा की तेईस साल की लड़की नैन्सी त्यागी ने सफलता के झंडे गाड़ दिए। इसे वहां रूट एजेंसी की तरफ से भेजा गया था। बेहद गरीब परिवेश से आई इस लड़की को कपड़े सिलने का बेहद शौक है। यह तमाम सेलिब्रिटीज को देखकर कपड़े सिलती थी और उसके फोटो इंस्टाग्राम पर लगाती थी। शुरू में उसे बहुत ट्रोल भी किया गया, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। धीरे-धीरे इसकी फैन फॉलोइंग बढ़ी और आज इसके साढ़े आठ लाख फॉलोअर्स हैं। अब हो सकता है और भी बढ़ गए हों। नैन्सी ने कान्स में गुलाबी रंग का जो गाउन पहना, उसे उसने खुद सिला था। इसमें एक हजार मीटर कपड़ा और बनाने में एक महीना लगा। जिस कान्स में बड़ी-बड़ी सेलिब्रिटीज दुनिया के मशहूर डिजाइनर्स के बेहद महंगे कपड़े पहनती हैं, वहां नैन्सी ने खुद का सिला गाउन पहनकर सबको चकित कर दिया। मशहूर अभिनेत्री सोनम कपूर ने कहा कि वह उसके लिए भी कपड़े सिले। नैन्सी ने फ्रांस में भी पत्रकारों के सवालों के जवाब हिंदी में ही दिए और हिंदी भाषी होने पर गर्व प्रकट किया। उसने कहा कि कम से कम उसे हिंदी तो आती है। उसका कहना है कि अंग्रेजी न आने पर भी वह वहां जा सकी, जहां जाने के सपने बहुत से लोग देखते हैं। शुरू में उसके पिता ने उसका विरोध किया था, मगर कान्स की सफलता के बाद अब वह भी उसका हौसला बढ़ाने लगे हैं। बताते चलें कि नैन्सी के पिता टीवी मैकेनिक हैं और मां एक फैक्टरी में काम करती हैं। उसका कहना था कि मां की हाड़-तोड़

मेहनत उससे देखी नहीं जाती थी। नैन्सी को लगता था कि कहीं मां का स्वास्थ्य न खराब हो जाए। वह उनके लिए ही कुछ करना चाहती थी। नैन्सी बारहवीं के बाद दिल्ली आ गई थी। वह यूपीएससी करना चाहती थी, मगर पैसे की तंगी के साथ अंग्रेजी न आने की समस्या भी थी। हालांकि उसे बाद में यह भी पता चला कि यूपीएससी की परीक्षा हिंदी में भी दी जा सकती है। लेकिन एक बार में चयन हो जाए, यह जरूरी नहीं है। वैसे भी गांव वाले माता-पिता से कहते रहते थे कि क्या लड़की पर पैसे खर्च कर रहे हो, लड़के पर करो। मगर नैन्सी ने एक कैमरा खरीदा और सोशल मीडिया का रुख किया और सहारा लिया अपने शौक यानी कपड़ों को सिलने का। बचपन में वह गुड़ियों के लिए कपड़े बनाती थी, फिर अपने लिए बनाने लगी। नैन्सी की मदद करने के लिए उसकी मां ने अपने गहने तक बेच दिए। उसका कहना है कि उसकी मां ने हमेशा उसे बहुत सहारा दिया। इसलिए वह भी उनके लिए कुछ करना चाहती है। कुल मिलाकर देखा जाए, तो सिलाई मशीन उसका सबसे बड़ा सहारा बनी। भारत में अरसे से सिलाई मशीन की सहायता से न जाने कितनी महिलाओं ने अपना और अपने परिवार का पेट पाला है। पति के न रहने पर बहुत-सी महिलाएं कपड़े सिलकर अपना गुजारा करती रही हैं। ऐसी बहुत-सी महिलाओं को मैं निजी तौर पर जानती हूं। कई तो रिश्ते में भी हैं। एक जमाने में सिलाई मशीन कंपनियां महिलाओं को कपड़े सिलना सिखाने के लिए स्कूल भी चलाती थीं। नैन्सी के मामले में सिलाई मशीन ने उसकी गरीबी तो दूर की ही, उसके सपनों को भी पूरा किया। यह बात भी उसके अभूतपूर्व आत्मविश्वास को दर्शाती है कि उसने एक अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में खुद के बनाए कपड़े पहने और खूब प्रशंसा हासिल की। उससे एक संवाददाता ने जब यह पूछा कि कोई तुमसे अगर अभी शादी करने के बारे में कहे, तो क्या करोगी? उसने मुस्कराते हुए जवाब दिया-भगा दूंगी। नैन्सी का कहना है कि सोशल मीडिया पर सफलता के लिए कन्टेंट में दम होना चाहिए। फिर उसने यह भी कहा कि चार-पांच दिन से कुछ नहीं सिला है, तो ऐसा लग रहा है कि कुछ काम ही नहीं किया है। नैन्सी से प्रेरणा लेकर उसके रिश्तेदारों में कई लड़कियां ऐसा करना चाहती हैं। बात भी सही है, अपने बीच से यदि कोई सफल होता है, तो बाकी औरों के लिए भी सफलता के नए द्वार खोलता है। लड़कियों के मामले में तो यह बात और भी सही है। नैन्सी आगे ही आगे बढ़ती जाएगी, अपने प्रयतनें से उसने राह के सारे कांटे हटा दिए है।

कब सुधरेंगी हमारी गलतियां, गणतंत्र के भविष्य के लिए जरूरी है इनका ठीक होना

पहली गलती पार्टी प्रणाली का भ्रष्टाचार है। ऐसा माना जाता है कि राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र होता है, जिसमें नेता स्वतंत्र रूप से चुने जाते हैं और वे अपनी पार्टी के सहयोगियों के प्रति जवाबदेह होते हैं। भारतीय राजनीति आज इस मॉडल से बिल्कुल अलग है। यहां राजनीतिक पार्टियां या तो व्यक्तित्व के साये तले हैं या एक पारिवारिक फर्म बन गई है।इस बार का चुनाव बहुत ही कठिन रहा और पूरी प्रक्रिया बहुत लंबी। इसके परिणाम कुछ ही दिनों में आ जाएंगे। जो भी पार्टी या गठबंधन अगली सरकार बनाएगा, उसे उन गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, जिन्हें चुनाव अभियान ने पीछे धकेल दिया है। भारत के सामने आज गलतियों की एक लंबी लिस्ट है, जिसे अच्छी तरह सुधारा नहीं गया तो एक गणतंत्र के रूप में हमारा भविष्य कमजोर हो सकता है। पहली गलती पार्टी प्रणाली का भ्रष्टाचार है। ऐसा माना जाता है कि राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र होता है, जिसमें नेता स्वतंत्र रूप से चुने जाते हैं और वे अपनी पार्टी के सहयोगियों के प्रति जवाबदेह होते हैं। भारतीय राजनीति आज इस मॉडल से बिल्कुल अलग है। यहां राजनीतिक पार्टियां या तो व्यक्तित्व के साये तले हैं या एक पारिवारिक फर्म बन गई है। व्यक्तित्व के साये तले वाली बात का ज्वलंत उदाहरण भारतीय जनता पार्टी है। पिछले एक दशक में पूरी पार्टी और सरकारी तंत्र का बड़ा हिस्सा नरेंद्र मोदी को दिव्य व्यक्तित्व वाला बनाने में जुटा रहा है। हालांकि भौगोलिक तौर पर अपने सीमित क्षेत्रों में पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी, केरल में पिनाराई विजयन, दिल्ली में अरविंद केजरीवाल, आंध्र प्रदेश में जगन मोहन रेड्डी और ओडिशा में नवीन पटनायक जैसे मुख्यमंत्री भी इसी तरह से काम कर रहे हैं। कुछ इस तरह कि मानो वे ही शासन करते रहेंगे। लोकतांत्रिक संस्थाओं का दिखावा करने वाली पारिवारिक पार्टियां भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि कांग्रेस इसके लिए मुख्य रूप से दोषी है। उसने पार्टी के लिए दशकों तक काम करने वालों को नजरअंदाज कर प्रियंका गांधी को रातों-रात महासचिव बना दिया। गांधी परिवार से पीछे न रह जाएं,

इस वजह से कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने गुलबर्गा की अपनी पुरानी सीट अपने दामाद को दे दी, जबकि उनका एक बेटा पहले से ही कर्नाटक में कैबिनेट मंत्री है। इसी तरह राष्ट्रीय जनता दल बिहार में, सपा उत्तर प्रदेश में और डीएमके तमिलनाडु में ऐसी पार्टियां हैं, जो एक ही परिवार के नियंत्रण में रही हैं। यह सोचने पर मजबूर करता है कि जिस ब्रिटेन की राजनीतिक प्रणाली को हमने अपनाया, उससे हम कितने अलग हैं। प्रधानमंत्री ऋषि सुनक के सामने कोई धर्म-पंथ नहीं है। मुख्य विपक्षी लेबर पार्टी के नेता केर स्टार्मर किसी राजनीतिक परिवार से नहीं आते हैं। वे दोनों आज जिस मुकाम पर हैं, वहां अपनी मेहनत और पार्टी के सहयोगियों के समर्थन से हैं। जब भी वे समर्थकों का विश्वास खो देंगे, बिना किसी हंगामे के अपना पद छोड़ देंगे और उनकी जगह पर ऐसे व्यक्ति को चुना जाएगा, जो किसी राजनीतिक वंशावली से नहीं होगा। लोकतंत्र की विश्वसनीयता इस बात से भी और कम हुई है कि नागरिकों को बिना मुकदमे के जेल में डाला जा सकता है और वर्षों तक जेल में रखा जा सकता है। कानूनों का उपयोग राजनीतिक विरोधियों ही नहीं, बल्कि किसी भी तरह की असहमति जताने वालों को डराने और चुप कराने के लिए किया जाता है। इस तरह के दुरुपयोग में अदालतें भी शामिल हैं। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि हमारी राजनीतिक कमियां दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र होने के दावों के आडंबरों के पीछे छिपी हैं। दूसरा दावा विश्व की सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था का है। हालांकि आर्थिक उदारीकरण की वजह से गरीबी में तो कमी आई है, लेकिन इससे असमानता भी बड़े पैमाने पर बढ़ी है। रोजगार में बढ़ोतरी नहीं हुई। शिक्षित वर्गों में सबसे ज्यादा बेरोजगारी है और श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है। भारत की अर्थव्यवस्था मिश्रित है और इसके पर्यावरणीय रिकॉर्ड विनाशकारी रहे हैं। आर्थिक तौर पर भारत के सबसे 'समृद्ध शहर' बेंगलुरु में जल संकट और भारत के 'वैश्विक उत्थान' वाले शहर नई दिल्ली में वायु प्रदूषण की उच्च दर इस बात का प्रतीक है कि हमने संसाधनों का कितना दुरुपयोग किया है। जैसा कि मैंने पहले लिखा है, हमारे लिए एक बड़ा मुद्दा पर्यावरण संकट है। जहरीली हवा, गिरता जल स्तर, दूषित मिट्टी और विलुप्त होती जैव विविधता की वजह से करोड़ों भारतीयों की आजीविका और सेहत खतरे में पड़ गई है और ये भविष्य के बारे में गंभीर सवाल उठा रहे हैं कि क्या हमारे औद्योगिक और आर्थिक संसाधन टिकाऊ है? कई दशकों तक सत्ता में रही कांग्रेस पार्टी की जिम्मेदारी इसमें सबसे अधिक बनती है। उसका कहना है कि 2014 में जब नरेंद्र मोदी ने सत्ता संभाली, उसके बाद से स्थिति और खराब होती गई। हम जिसे सांप्रदायिक समस्या कहते है, वह भी कोई नई नहीं है। पाकिस्तान बनने के बाद जो मुसलमान भारत में रह गए, उन्हें पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने यह कहते हुए आश्वस्त किया था कि पाकिस्तान में जो भी अधिकार दिए गए है, वही समान नागरिक अधिकार यहां भी दिए जाएंगे। लेकिन उन्हें अक्सर संदेह की दृष्टि से देखा गया। धर्मों के बीच की यह खाई राजीव गांधी के शासनकाल में बढ़ती गई, क्योंकि उन्होंने हिंदू और मुस्लिम, दोनों के बीच कट्टरता को बढ़ावा दिया। 2014 के बाद से भारत के सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय में असुरक्षा की भावना कई गुना बढ़ गई, क्योंकि स्वतंत्र राष्ट्र के इतिहास में पहली बार केंद्र में सत्तारूढ़ दल ने अपनी हिंदू बहुसंख्यकवादी महत्वाकांक्षा को स्पष्ट कर दिया था। राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में धर्म का बोलबाला बढ़ गया, जब प्रधानमंत्री ने खुद को ईश्वर द्वारा धरती पर भेजे गए उस हिंदू राजा की तरह दिखाया, जो हिंदुओं की सभी परेशानियों को दूर कर देगा। इसके परिणामस्वरूप भारतीय मुसलमानों ने खुद को इतना डरा हुआ कभी महसूस नहीं किया, जितना अब कर रहे है। ये भविष्य के लिए क्या संकेत दे रहे हैं, कहना मुश्किल है। एक अंतिम समस्या, जो मैं उठाना चाहता हूं, वह है राज्य और केंद्र सरकार के बीच संबंध। भाजपा समर्थक 1959 में जवाहरलाल नेहरू द्वारा केरल की वामपंथी सरकार को बर्खास्त करने और इंदिरा गांधी के बार-बार अनुच्छेद 356 का उपयोग करने पर चर्चा तो करना पसंद करते हैं, लेकिन दूसरे दलों के शासन वाले राज्यों के प्रति उनका रवैया अच्छा नहीं रहा है।

संक्षिप्त समाचार

राजस्थान में भाजपा और कांग्रेस के अपने-अपने दावे, सीएम भजनलाल बोले- विपक्ष के पास पीएम चेहरा नहीं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

जयपुर। लोकसभा चुनाव के एग्जिट पोल पर राजस्थान में सत्तारूढ़ दल भाजपा और कांग्रेस के नेताओं ने अपने-अपने दावे किए हैं। भाजपा ने जहां एग्जिट पोल

को सही बताया, वहीं कांग्रेस के नेताओं का कहना है कि चार जून को यह गलत साबित होंगे। लोकसभा चुनाव के एग्जिट पोल पर राजस्थान में सत्तारूढ़ दल भाजपा और कांग्रेस के नेताओं ने अपने-अपने दावे किए हैं। भाजपा ने जहां एग्जिट पोल को सही बताया वहीं कांग्रेस के नेताओं का कहना है कि चार जून को यह गलत साबित होंगे । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि विपक्ष के पास कोई प्रधानमंत्री का चेहरा नहीं है।मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा, 'विपक्ष के पास कोई प्रधानमंत्री का चेहरा नहीं है। आप अनुमान लगा सकते हैं उनका गठबंधन कैसा है। दिल्ली में कांग्रेस और आप एकसाथ चुनाव लड़ रहे हैं। हरियाणा और पंजाब में क्या हुआ। वहां अलग-अलग लड़ रहे हैं। विपक्ष हताश और निराश है।' सीएम ने कहा, 'राजस्थान में 2014 और 2019 की तरह सभी 25 सीटों पर भाजपा की जीत होगी। अब एक बार फिर सभी 25 सीटों पर भाजपा प्रत्याशियों की जीत होगी।' भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष सी.पी.जोशी ने कहा, 'देश में हर कोई कह रहा है कि अब की बार मोदी सरकार चार सौ पार।' वहीं पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने एग्जिट पोल को नकारा है। गहलोत ने ट्वीट कर कहा, 'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिस तरह धमकाने वाली भाषणा का इस्तेमाल तीन दिन पहले जनसभा में किया था, उसी का असर एग्जिट पोल में दिखाई दे रहा है। चैनल उसी डर से भाजपा को एकतरफा जीतता हुआ दिखा रहे हैं। जनहित इसी में है कि एग्जिट पोल का हाल 2024 की तरह हो।'

कौन हैं पेमा खांडू जिन्होंने अरुणाचल में भाजपा की कराई वापसी, कभी कांग्रेस से की थी बगावत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी ने अरुणाचल प्रदेश की 60 विधानसभा सीटों में से 46 पर कब्जा कर अपनी सत्ता को बरकरार रखा है। सत्तारूढ़

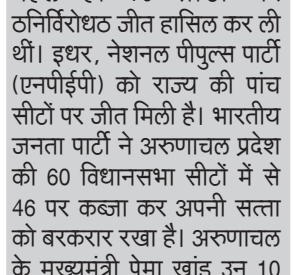

भाजपा ने मतदान शुरू होने से पहले ही 10 सीटों पर ठनिर्विरोधठ जीत हासिल कर ली थीं। इधर, नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीईपी) को राज्य की पांच सीटों पर जीत मिली है। भारतीय जनता पार्टी ने अरुणाचल प्रदेश की 60 विधानसभा सीटों में से 46 पर कब्जा कर अपनी सत्ता को बरकरार रखा है। अरुणाचल के मुख्यमंत्री पेमा खांडू उन 10 उम्मीदवारों में से एक थे जिन्होंने बिना किसी मुकाबले के अपनी सीट जीती। इस प्रचंड जीत के साथ खांडू लगातार तीसरी बार राज्य की कमान संभालने के लिए तैयार हैं। जानिए उनका सियासी सफरअरुणाचल के मुख्यमंत्री पेमा खांडू उन 10 उम्मीदवारों में से एक थे, जिन्होंने बिना किसी मुकाबले के अपनी सीट जीती। इस प्रचंड जीत के साथ खांडू लगातार तीसरी बार राज्य की कमान संभालने के लिए तैयार है। बता दें कि पेमा खांडू अरुणाचल के पूर्व मुख्यमंत्री दोरजी खांडू के बेटे हैं। 2016 में सीएम के रूप में चुने जाने के बाद वह पूर्वोत्तर में बड़े नेता के रूप में उभरे। पेमा के पिता दोरजी खांडू की 2011 में एक हेलिकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

समृद्धि प्रीमियर लीग : टाइटंस बनी चैम्पियन, स्ट्राइकर ने जीता सिल्वर कप

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। आईपीएल की तर्ज पर आयोजित किये जा रहे एसपीएल के फाइनल मैच में टाइटंस ने डेस्ट्रॉयर को हराकर कर पहला टाइटल अपने नाम किया। पहले बल्लेबाजी करने उतरी डेस्ट्रॉयर ने 20 ओवर में 163 रन बनाये। डेस्ट्रॉयर की तरफ से सबसे ज्यादा गोलू ने 39 रन बनाये। जवाब में लक्ष्य का पीछा करने उतरी टाइटंस ने 19 ओवर में 2 विकेट शेष रहते ही 164 रन बना लिए। टाइटंस के तरफ से कौशल ने 71 रनों की शानदार पारी खेली। मैन ऑफ़ द मैच टाइटंस के कप्तान गौरव को चुना गया। जिन्होंने मात्र 25 बाल में 59 रनो की धमाकेदार पारी खेली साथ ही 2 विकेट भी लिए। प्लेयर ऑफ़ द टूर्नामेंट अनिकेत को चुना गया। वहीँ सिल्वर कप का मुकाबला स्ट्राइकर और वारियर्स के बीच में खेला गया। पहले बल्लेबाजी करते हुए स्ट्राइकर ने 20 ओवर में 182 रन बनाये। स्ट्राइकर की तरफ से राहुल ढाका ने सबसे जयादा 72 रन बनाये। वारियर्स की तरफ से कुलदीप ने सबसे ज्यादा 3 विकेट लिए। जवाब में लक्ष्य का पीछा करने उतरी वारियर्स की टीम ने अच्छी फाइट करते हुए 181 रन बनाये। स्ट्राइकर ने रोचक मुकाबले को 1 रन से जीत लिए। वारियर्स की तरफ से अभय ने सबसे ज्यादा 62 रन बनाये। मैन ऑफ़ द मैच स्ट्राइकर के राहुल ढाका को चुना गया।

मानहानि मामले में राहुल गांधी की फिर बढ़ी मुसीबत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

बेंगलुरु। कांग्रेस नेता राहुल गांधी को बेंगलुरु की एक अदालत ने शनिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा उनके खिलाफ दायर

मानहानि के मामले में 7 जून को 'बिना नागा' व्यक्तिगत रूप से पेश होने का निर्देश दिया है। विशेष अदालत ने राहुल गांधी को शनिवार को पेश होने से छूट देते हुए यह निर्देश दिया है। अदालत ने कहा, ठयह स्पष्ट किया जाता है कि आरोपी नंबर 4 अगली सुनवाई की तारीख पर 'बिना गैरहाजिर' हुए इस अदालत के समक्ष पेश होगा। आरोपी नंबर 4 की उपस्थिति के लिए 7 जून को बुलाया गया है।विज्ञापनों में कांग्रेस पार्टी ने आरोप लगाया था कि भाजपा (उस समय राज्य में सत्ता में थी) सार्वजनिक कार्यों के निष्पादन के लिए ठेकेदारों और अन्य लोगों से 40 प्रतिशत तक कमीशन/रिश्वत ले रही थी। भाजपा ने अपनी शिकायत में कांग्रेस नेताओं पर तत्कालीन मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई सहित अपनी पार्टी के सदस्यों को निशाना बनाकर झूठे विज्ञापन फैलाने का आरोप लगाया है। आज सुनवाई के दौरान गांधी के वकील ने इंडी गठबंधन की बैठक में भाग लेने के कारण उनकी उपस्थिति से छूट मांगी। कोर्ट ने उन्हें आज उपस्थिति से छूट दी, लेकिन आदेश दिया कि वे 7 जून को हर हाल में उपस्थित रहें।

चंपई सोरेन बोले- हम झारखंड में 10 सीटें जीत रहे, भाजपा ओडिशा में प्रदर्शन को लेकर खुश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं ने एग्जिट पोल के नतीजों पर खुशी जताई जिसमें राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की भारी जीत की भविष्यवाणी की गई है, वहीं विपक्षी इंडिया ब्लॉक के नेताओं ने नतीजों को बकवास बताते हुए कहा कि वे कम से कम 295 सीटें जीतकर केंद्र में सरकार बनाएंगे। भाजपा नेताओं ने एग्जिट पोल के नतीजों पर खुशी जताई जिसमें राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की भारी जीत की भविष्यवाणी की गई है वहीं विपक्षी इंडिया ब्लॉक के नेताओं ने नतीजों को बकवास बताते हुए कहा कि वे कम से कम 295 सीटें जीतकर केंद्र में सरकार बनाएंगे। झारखंड के मुख्यमंत्री ने कहा कि इंडि?या ब्लॉक राज्य में 10 से अधिक सीटें और देश में 295 से अधिक सीटें जीतेगा। झारखंड के मुख्यमंत्री चंपई सोरेन ने कहा कि इंडिया ब्लॉक राज्य में 10 से अधिक सीटें और देश में 295 से अधिक सीटें जीतेगा। चंपई सोरेन ने रविवार को पत्रकारों से बात करते हुए कहा, सत्तारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा इंडिया ब्लॉक में भागीदार है और राज्य में कांग्रेस के साथ गठबंधन सरकार है। इधर, तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री ओ पननेरसेल्वम ने कहा कि भाजपा को लोकसभा चुनावों में बड़ा बहुमत मिलेगा।

DURGAWATI
INTERNATIONAL SCHOOL & COLLEGE
Admission Open 2024-2025
प्रवेश प्रारम्भ 2024-2025

www.durgawatischool.com

ICSE Affiliation Code :- UP481

Facilities
High quality labs
Expert Teachers
Modern Facilities
Overall Development

NURSERY TO CLASS 12TH
Free Transport
0 to 3 KM

Contact:-9415017879, 7081152877, 8957282536
Champaran Estate, Gosaura Kala, Dorwa Road,
Meja Prayag raj, Uttar Pradesh, India

रवीना टंडन के मारपीट वाले विवाद पर आया कंगना रनौत का रिएक्शन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। रविवार को रवीना टंडन एक विवाद में फंस गईं। उन पर बताया कि रवीना टंडन और उनके ड्राइवर के खिलाफ कुछ लोगों ने इस तरह के रोड रेज जैसी घटनाओं की निंदा करते हैं। उन लोगों को

एक विवाद में फंस गईं। उन पर एक बुजुर्ग महिला पर गाड़ी चढ़ाने और उनके साथ मारपीट करने का आरोप लगाया गया है। कहा गया कि रवीना ने नशे की हालत में महिला और उसके परिवार के साथ मारपीट की है। हालांकि, मुंबई पुलिस ने इस आरोप को खारिज कर दिया।रवीना टंडन के साथ नशे की हालत में एक महिला संग मारपीट करने का आरोप लगा था। मुंबई पुलिस ने बयान जारी कर इस मामले की पूरी सच्चाई बताई थी। अब एक्ट्रेस के इस विवाद पर कंगना रनौत का रिएक्शन सामने आया है। अभिनेत्री ने एक पोस्ट कर अपनी बात रखी है। उन्होंने किसकी साइड ली है जानें यहां। मुंबई पुलिस ने नशे की हालत में मारपीट का आरोप लगाकर केस दर्ज कराया था। बाद में जब पुलिस ने तहकीकात करते हुए सीसीटीवी फुटेज देखा तो उन्हें सच का पता चला। मामला मारपीट तक नहीं पहुंचा था। दोनों के बीच सिर्फ बहसबाजी हुई थी। अब कंगना रनौत का इस पर रिएक्शन आया ह। रवीना टंडन के इस विवाद पर कंगना रनौत ने रिएक्शन दिया है और एक्ट्रेस का सपोर्ट किया है। कंगना ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर इस मामले को लेकर लिखा, ठरवीना टंडन जी के साथ जो हुआ वह बहुत ही चिंताजनक है। अगर विरोधी ग्रुप में 5-6 और लोग होते तो उन्हें पीट-पीटकर मार दिया जाता। हम फटकार लगाई जानी चाहिए। उन लोगों को इस तरह के हिंसक और जहरीले व्यवहार से बचना चाहिए।शनिवार की रात को रवीना टंडन और उनके ड्राइवर की बांद्रा में कुछ महिलाओं से बहस हो गई। बाद में महिला ने अभिनेत्री के खिलाफ नशे की धुत में गाड़ी चढ़ाने का आरोप लगाया। इस मामले में मुंबई पुलिस ने मिड-डे के साथ बातचीत में बताया कि गाड़ी पीछे करने पर रवीना और उनके ड्राइवर की महिला से बहस हुई थी। बात गाली-गलौज तक पहुंच गई थी। पुलिस ने बताया कि रवीना नशे में नहीं थीं। पुलिस ने कहा था कि रवीना भी केस करने गई थीं, लेकिन बाद में उन्होंने यह करने से मना कर दिया था।

मुन्ना भैया' ने बताया कैसा होगा किरदार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। हिंदी सिनेमा में अक्सर देखा जाता है कि कलाकार के किसी एक प्रोजेक्ट की सफलता के

बाद आगे उसके लिए उसी तरह के ढेर सारे प्रस्ताव आने शुरु हो जाते हैं। इस साल फिल्म मडगांव एक्सप्रेस की सफलता के बाद अभिनेता दिव्येंदु शर्मा के साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। अब दिव्येंदु को कामेडी फिल्मों के कई प्रस्ताव मिल रहे हैं, हालांकि, उनकी नजरें विविधता पूर्ण भूमिकाएं निभाने पर हैं। मिर्जापुर के पहले दो सीजन में अपने अभिनय से भौकाल मचा चुके मुनन भैया यानी अभिनेता दिव्येंदु शर्मा काफी सुखिर्यों में बने हुए हैं। हाल ही में वह मडगांव एक्सप्रेस में लीड रोल में दिखाई दिए। उनके अभिनय को लोगों ने काफी पसंद किया। अब एक्टर के हाथ एक और बड़ी वेब सीरीज लगी है। इस बात का खुलासा खुद दिव्येंदु ने किया है। इस क्रम में वह रेलवे के तत्काल टिकट आरक्षण में होने वाले फर्जीवाड़े पर आधारित शो कर रहे हैं। इस शो में वह एक बिहारी लड़के की भूमिका में होंगे। शो को लेकर दैनिक जागरण के सहयोगी अखबार मिड डे बातचीत में दिव्येंदु ने बताया, 'मैं एक अन्य प्रोजेक्ट कर रहा हूं, जो कि तत्काल टिकट पर होने वाले घोटालों पर आधारित है। इस शो में मैं पहली बार किसी बिहारी लड़के की भूमिका निभा रहा हूं। इसके अलावा मैंने एक और शो किया है, जिसे फिलहाल कास्टल नाम दिया गया है। इसमें मैंने एक अमीर लड़के की भूमिका निभाई है। इसके साथ मैंने एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर फिल्म भी है। आगामी दिनों में आप मुझे स्क्रीन पर ज्यादा देखेंगे, क्योंकि पिछले दो वर्षों में मैंने बिना रुके काम किया है।' दिव्येंदु की फिल्म अगिन भी प्रदर्शन की कतार में है।वेब सीरीज मिर्जापुर में मुनन भैया का किरदार निभाकर मशहूर हुए दिव्येंदु शर्मा इसके बाद 'मडगांव एक्सप्रेस' और 'द फैमिली मैन' सीरीज में दिखाई दिए, लेकिन उन्हें आज भी लोग 'मिर्जापुर' वाले किरदार से ही याद करते हैं। हालांकि, एक्टर पहले ही यह साफ कर चुके हैं कि इस बार वो तीसरे सीजन का हिस्सा नहीं बनने वाले हैं। वहीं, मिर्जापुर 3 की रिलीज डेट को लेकर अभी कोई जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन ऐसा बताया जा रहा है कि इस महीने उसे लेकर भी अपडेट आ सकता है।

'रधिया' ने खोल दी 'मिर्जापुर 3' की रिलीज डेट की पोल, जून की इस तारीख को मचेगा 'भौकाल'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। वेब सीरीज मिर्जापुर का क्रेज काफी ज्यादा है। पंचायत 3 की रिलीज के बाद अब ओटीटी प्लेटफॉर्म प्राइम वीडियो की इस पेशकश के लिए दर्शकों के सब्र का बांधता टूटता हुआ नजर आ रहा है और हर कोई मिर्जापुर सीजन की रिलीज डेट का इंतजार देखने के लिए फैंस को अधिक दिनों तक नहीं रुकना पडेगा। क्योंकि अब मिर्जापुर की रधिया यानी एक्ट्रेस प्रशनन शर्मा ने रिलीज डेट को लेकर पोल खोल दी है, जिसे जानकर सिने प्रेमियों की एक्साइटमेंट बढ़ने वाली है। बीते दिनों से देखा जा रहा है कि मिर्जापुर 3 की रिलीज डेट को लेकर मेकर्स रिश्तेदारी में शादी है और बाहुबली का फंक्शन है तो भौकाल होना बनता है। यानी रधिया के इस वीडियो से ये अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है कि मिर्जापुर 3 की रिलीज डेट को लेकर 23 जून को बड़ा अपडेट मिल सकता है। हालांकि अभी ये नहीं कहा जा सकता है कि

कर रहा है।ओटीटी प्लेटफॉर्म प्राइम वीडियो की पेशकश मिर्जापुर सीजन 3 की रिलीज का फैंस बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। पंचायत 3 के बाद अब हर किसी की नजर इस पर टिकी हुई हैं कि आखिर कब पंकज त्रिपाठी और अली फजल की ये सीरीज रिलीज होगी। अब मिर्जापुर की रधिया ने इस मामले पर हिंट दे दिया है। अब लगता है कि मिर्जापुर 3 को की तरफ से सोशल मीडिया पर लगातार हिंट दिए जा रहे हैं। इस बीच अब शनिवार को प्राइम वीडियो ने अपने ऑफिशियल एक्स अकाउंट हैंडल पर एक लेटेस्ट वीडियो शेयर किया है, जिसमें रधिया से मिर्जापुर 3 की रिलीज डेट को लेकर सवाल पूछा जा रहा है। इस पर वह कहती हैं- इस 23 को, भाभी अपने लिए 3 ड्रेस और हमारे लिए 2 सूट सिलवाई हैं। इसी 23 तारीख को उनकी 23 जून को ही मिर्जापुर 3 को रिलीज किया जाएगा। लेकिन इस अनाउंसमेंट के बाद यकीनन तौर पर फैंस की उत्सुकता काफी बढ़ने वाली हैं। मिर्जापुर के आने वाले सीजन में इस बार आपको मुनन भैया यानी एक्टर दिव्येंदु शर्मा की झलक देखने को नहीं मिलेगा। कुछ समय पहले उन्होंने खुद इस बात की पुष्टि की है कि वह मिर्जापुर 3 का हिस्सा नहीं हैं।

पापा रणबीर को राहा ने किया किस, अनंत राधिका के प्री वेडिंग के बाद इस लिटिल प्रिंसेज के क्यूट वीडियो ने जीता दिल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। इटली में अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के दूसरे प्री वेडिंग की धूम देखने को मिली।

बॉलीवुड के साथ ही हॉलीवुड सितारों ने भी इस पार्टी में अपनी परफॉर्मेंस से चार चांद लगा दिया। इस पार्टी की कुछ झलकियां सामने आईं, लेकिन तमाम सितारों के बीच लाइमलाइट लूटी राहा ने, जिसका क्यूट वीडियो और फोटो वायरल हो रहा है। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के दूसरे प्री वेडिंग सेलिब्रेशन में भी बी टाउन स्टार्स ने जमकर मौज मस्ती की। इस बार पार्टी इंडिया में न होकर इटली में क्रूज पर हुई जहां से कुछ वीडियो और फोटो सामने आ चुके हैं। अनंत-राधिका की पार्टी के बाद से राहा का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसने लोगों का दिल जीता है। 29 मई से इटली में अनंत और राधिका की प्री वेडिंग का आयोजन किया गया। 3-4 दिनों तक चलने वाली ये पार्टी किसी होटल में न होकर क्रूज पर हुई। अंबानी फैमिली की क्रूज पार्टी में राहा का जलवा देखने लायक रहा। आलिया भट्ट और रणबीर कपूर की बेटी ने अपनी मासूमियत और क्यूटनेस से लोगों का दिल जीता है। उनका रणबीर कपूर के साथ एक वीडियो काफी पसंद किया जा रहा है। प्री वेडिंग फंक्शन अब खत्म हो चुका है। बी टाउन स्टार्स वहां से मुंबई लौट चुके हैं। बीती रात आलिया-रणबीर को उनकी लिटिल प्रिंसेज राहा के साथ मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया गया। इस दौरान राहा के एक स्वीट जेश्चर ने पैपराजी अंटेशन कैच किया। रणबीर, राहा को गोद में लेकर आलिया के साथ अपनी कार की तरफ बढ़ रहे थे। तभी राहा ने कुछ ऐसा किया, जो लोगों को बहुत पसंद आ रहा है। डैडी रणबीर की गोद में राहा ने उन्हें किस किया। सबसे खास बात ये कि इस बार राहा ने पैप्स को स्माइल करते हुए पोज दिया। वीडियो को देख लोग रणबीर और आलिया की तारीफ करने से खुद को रोक नहीं पाए हैं। एक यूजर ने कमेंट किया, 'सेल्फ सफिशियंट पेरेंट, बिना नैनी के इन्हें बेटी के साथ घूमते देखना अच्छा लग रहा है।' एक अन्य ने लिखा, 'राहा ने अपने पिता को गाल पर किस किया, ये कितना क्यूट है।

डिप्रेशन में बीते 'पंचायत 3' के 'बनराकस' के दिन, इस कारण से एडल्ट फिल्मों में करना पड़ गया था काम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम पर गदर काटने वाली सीरीज 'पंचायत 3' का हर एक किरदार फेमस है। इस शो की खास बात है कि छोटे से छोटा

और बड़े से बड़ा कैरेक्टर भी लोगों के दिलों को छू रहा है। 'सचिव जी' और 'प्रधान जी' के अलावा पंचायत सीरीज के कई और कैरेक्टर्स हैं, जिन्होंने अपनी एक्टिंग से लोगों का दिल जीत लिया है। इनमें से ही एक हैं दुर्गेश कुमार।ओटीटी पर इन दिनों पंचायत सीरीज की धूम मची है। इस शो का तीसरा सीजन रिलीज हो चुका है। पंचायत सीरीज का हर कलाकार फेमस है। सचिव जी का रोल प्ले करने वाले जितेंद्र कुमार हों या फिर बनराकस बने दुर्गेश कुमार जिनकी स्ट्रगल स्टोरी कुछ कम इंट्रेस्टिंग नहीं है। बनराकस उर्फ दुर्गेश कुमार की इस सीरीज ने किस्मत बदल कर रख दी। पंचायत वेब सीरीज में भूषण के किरदार को कई तरह से दिखाया गया है। गांव की राजनीति में 'बनराकस' यानी कि दुर्गेश कुमार की भी अहम भूमिका रही है। पहले सीजन में दुर्गेश का किरदार काफी छोटा था। दूसरे सीजन में वह इस सीरीज की जान बन गए और तीसरे सीजन में वह पहले से भी ज्यादा एंटरटेन कर रहे हैं। दुर्गेश का 'भूषण' किरदार लोगों के दिलों में उतर गया है। दुर्गेश कुमार 'पंचायत' सीरीज में अब तक जितने पसंद किए गए और अब भी किए जा रहे हैं।

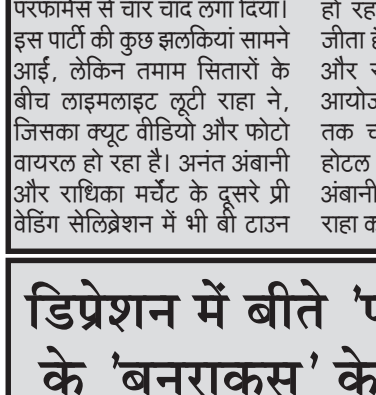

आमिर खान की एक्स वाइफ किरण राव का संघर्ष पर छलका दर्द, बताया- शुरुआती दिनों में ये काम करके कमाए पैसे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली।किरण राव इन दिनों अपनी फिल्म 'लापता लेडीज' की सफलता को एन्जॉय कर रही हैं।

इस फिल्म की कहानी को लोगों ने काफी पसंद किया और आम लोगों से लेकर कई हस्तियों तक ने किरण के निर्देशन की तारीफ की। आमिर खान की एक्स वाइफ ने बॉलीवुड में अपने करियर की शुरुआत फिल्म 'लगान' में अस्सिटेंट डायरेक्टर बनकर की थी, लेकिन उनके लिए मुंबई जैसी बड़ी और महंगी जगह पर रहना इतना आसान नहीं था। आमिर खान की एक्स वाइफ किरण राव इन दिनों अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को लेकर सुखिर्यों में बनी हुई हैं। हाल ही में उनकी मूवी लापता लेडीज रिलीज हुई जिसे काफी तारीफें मिलीं। वहीं दूसरी तरफ किरण अपनी पर्सनल लाइफ से जुड़े किस्से आए दिन शेयर कर रही हैं। अब डायरेक्टर ने अपने शुरुआती दिनों को याद किया है। अब हाल ही में किरण ने इस बात का खुलासा किया है। डायरेक्टर ने बताया कि कई फीचर फिल्मों में एक असिस्टेंट डायरेक्टर के रूप में काम करने के बावजूद भी उनकी कमाई मुंबई में रहने के लिए पूरी नहीं थी। हाल ही में लापता लेडीज की डायरेक्टर ने पॉडकास्ट साइरस सेज में बात करते हुए बताया कि वह अपने शुरुआती दिनों में टेंपरेरी वर्कर थीं। उन्होंने कहा कि इसके बाद जब होस्ट ने उनसे लगान में उनकी इंवॉल्वमेंट के बारे में बात की और पूछा कि वह आपके लिए फायदेमंद होने चाहिए थी, तो इसके बारे में बात करते हुए किरण ने कहा कि किरण ने लगान के दिनों को याद करते हुए एक किस्सा भी शेयर किया। उन्होंने बताया कि वह काफी मुश्किल समय था। मुझे वह सिर्फ कॉफी मिलती थी और कुछ भी गलत होता, तो मुझ पर चिल्लाया जाता था।

मुनव्वर फारूकी पर 'दूसरी बीवी' महजबीन ने खुलेआम लुटाया प्यार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। मुनव्वर फारूकी किसी न किसी वजह से चर्चा में बने रहते हैं। दो लड़कियों को एक समय पर

डेट करने का आरोप हो, गिरफ्तारी हो या फिर बीमारी के चलते अस्पताल में भर्ती होना हो, मुनव्वर ने कई वजहों से हेडलाइंस में जगह बनाई है। इन दिनों वह अपनी दूसरी शादी को लेकर सुखियों में हैं। इन दिनों अपनी दूसरी शादी को लेकर चर्चा में हैं। कुछ दिन पहले ऐसी खबरें आईं कि मुनव्वर ने मेकअप आर्टिस्ट महजबीन कोटवाला से दूसरा निकाह कर लिया है। अब मुनव्वर ने सोशल मीडिया पर अपने दिल की बात कही है। वहीं महजबीन ने भी बिग बॉस 17 विनर पर प्यार लुटाया है। जानिए उन्होंने क्या कहा।बीते दिनों खबर आई थी कि मुनव्वर फारूकी ने मेकअप आर्टिस्ट महजबीन से दूसरा निकाह कर लिया है। एक्टर और कॉमेडियन ने एक रिसेप्शन भी होस्ट की थी, जिसमें सिर्फ परिवार और करीबी दोस्त ही शामिल हुए थे। हालांकि, मुनव्वर या महजबीन ने शादी की खबरों पर कोई रिएक्ट नहीं किया है और ना ही शादी की आधिकारिक घोषणा की है। मगर अब उन्होंने इशारों-इशारों में अपने दिल की बात कह दी है। दरअसल, शादी के बाद मुनव्वर फारूकी ने अपना पहला लाइव शो किया है। सोशल मीडिया पर इसकी झलकियां भी सामने आई हैं। इस बीच महजबीन के पोस्ट ने उनके रिश्ते को इशारों-इशारों में कन्फर्म करने का काम किया है।महजबीन ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर मुनव्वर के लाइव शो का एक वीडियो शेयर किया है, जिसके बैकग्राउंड में 'मिस्टर एंड मिसेज माही' का गाना 'देखा तेनु' लगाया है, जो उनके प्यार को जाहिर कर रहा है। महजबीन ने हार्ट इमोजी के साथ मुनव्वर को टैग करते हुए कैप्शन में लिखा, ठआप पर गर्व है। महजबीन के प्राउड वाले पोस्ट के बाद मुनव्वर फारूकी ने भी इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट कर दिल की बात शायराना अंदाज में कही है। उन्होंने आधी रात को पोस्ट में लिखा, ठना जाना कैसा सजदों में शोर है, तेरे बाद महफिलें खामोश हैं, हम दोनों हूबहू एक जैसे हैं, मैं कहता उसका, वो कहती मेरा दोष है। मुनव्वर फारूकी की महजबीन के साथ दूसरी शादी है। वह कुछ साल पहले ही अपनी पहली पतनी से अलग हुए हैं, जिनसे उन्हें एक बेटा है। उनकी पहली वाइफ का भी निकाह हो गया है। बात करें महजबीन की तो वह भी तलाकशुदा और एक बेटी की मां हैं। वह पेशे से एक मेकअप आर्टिस्ट हैं।

जब संजीदा शेख के साथ एक लड़की ने की इतनी गंदी हरकत, सहम गई थीं एक्ट्रेस

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। एक महिला के साथ आए दिन छेड़खानी के मामले सामने आते हैं। सेलिब्रिटीज भी इससे अछूते नहीं हैं। कई बार भीड़ का फायदा उठाकर या फिर सेल्फी लेने के बहाने कुछ लोग एक्ट्रेसेज को अनकन्फर्टेबल कर देते हैं। हाल ही में, संजीदा शेख ने भी कुछ ऐसा ही खुलासा किया है। एक्ट्रेस ने बताया कि एक क्लब में उनके साथ छेड़खानी हुई। इस वक्त में वहीदा का किरदार निभाकर लाइमलाइट बटोर रही हैं। सीरीज के प्रमोशन के बीच उन्होंने अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी खुलकर बात की है। हाल ही में अभिनेत्री ने अपने साथ हुए एक ऐसी घटना का जिक्र किया है जिसे जानकर आपके भी होश उड़ जाएंगे। अभिनेत्री इससे हैरान रह गई थीं। संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज 'हीरामंडी' के लिए चर्चा बटोर रहीं संजीदा शेख ने एक हैरान करने वाला खुलासा किया है। उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया कि क बार उनके साथ छेड़खानी हुई और यह किसी लड़के ने नहीं, बल्कि एक लड़की ने की थी। उनके साथ यह हरकत एक नाइट क्लब में की गई थी। टरफ्लाई के साथ बातचीत में संजीदा शेख ने कहा, ठमुझे एक घटना बहुत अच्छे से याद है, लेकिन यह एक लड़की ने की थी। मैं एक नाइट क्लब में थी। एक लड़की मेरे पास से गुजर रही थी और उसने मेरे स्तन को छुआ और चली गई। मैं एकदम हैरान रह गई कि अभी क्या हुआ। हम सुनते हैं कि मर्द आपके साथ ऐसी हरकत करते हैं और वे गलत व्यवहार करते हैं, लेकिन लड़कियां भी कोई कम नहीं हैं। संजीदा शेख ने आगे कहा, ठअगर आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं तो आप बिना किसी परवाह के उस पर चल रहे हैं। इसका मर्दों या महिलाओं से कोई लेना-देना नहीं है। जो भी गलत है, वह गलत है। अगर किसी महिला ने आपके साथ गलत किया है तो उसे बताएं क्योंकि मुझे लगता है कि पीडि़त होने का दिखावा करना बहुत ही बकवास है। 39 साल की संजीदा शेख (ऐंहर्री् ऐंप्त्व) ने साल 2003 में 'बागबान' फिल्म से डेब्यू किया था। वह तमिल, कनन्ड़ और पंजाबी फिल्मों में भी काम कर चुकी हैं। उन्हें 'क्या होगा निम्मो का', 'कयामत', 'क्या दिल में है', 'पिया का घर प्यारा लगे' जैसे टीवी शोज से पॉपुलैरिटी मिली है।

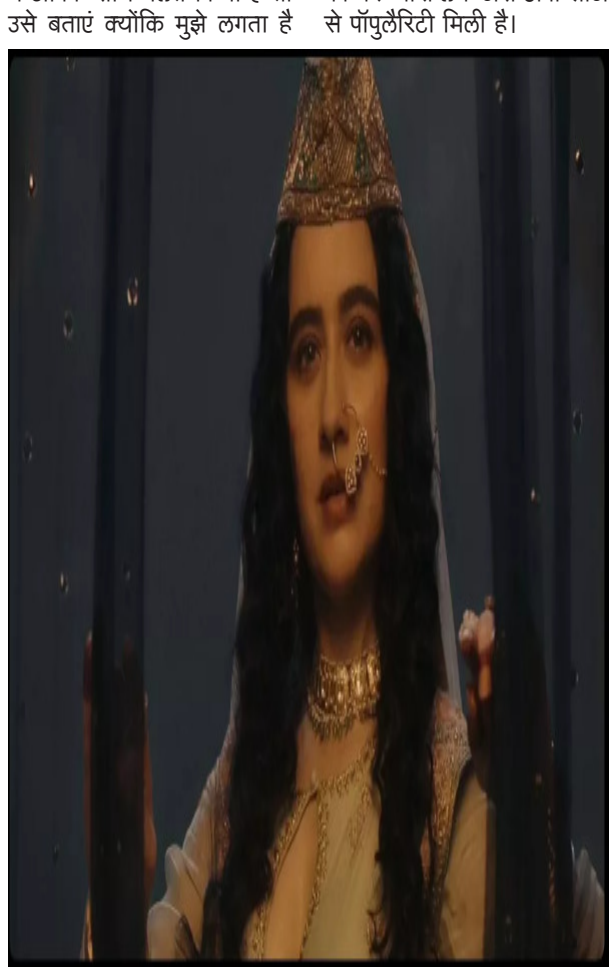

रविवार को 'मिस्टर एंड मिसेज माही' ने उड़ाया गर्दा, बम्पर कमाई से वीकेंड हुआ सुहाना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली।राजकुमार राव के लिए मई का महीना बहुत खास रहे। पहले 'श्रीकांत' से बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचाया और मई के

अंत में उनकी एक और फिल्म 'मिस्टर एंड मिसेज माही' रिलीज हो गई।स्टारर फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही (ईंह् श्े ईंप्त् ऊंब् 3ँदें ध्मि ण्दत्तमूदह) रिलीज के बाद से ही बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रही है। तीन दिन में फिल्म ने अच्छा-खासा कारोबार कर दिया है। राजकुमार राव के साथ मिलकर जाह्नवी कपूर ने जून की अच्छी शुरुआत की है। फिल्म ने तीन दिन के अंदर कितना कारोबार कर लिया है जानिए यहां। 10 मई को रिलीज हुई 'श्रीकांत' के बाद अब राजकुमार राव अपनी हालिया रिलीज फिल्म 'मिस्टर एंड मिसेज माही' से बॉक्स ऑफिस पर राज कर रहे हैं। पहले दिन छक्का मारने वाली मूवी ने शनिवार को धमाकेदार कलेक्शन किया। अब रविवार को भी मूवी की बल्ले-बल्ले हो गई। करण जौहर निर्मित स्पोर्ट्स ड्रामा 'मिस्टर एंड मिसेज माही' 31 मई को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। फिल्म की कहानी रोमांस के साथ-साथ क्रिकेट प्रेम को भी दिखाती है। दर्शकों के दिल में फिल्म की कहानी इस कदर उतरी कि थिएटर्स में जाह्नवी और राजकुमार का बल्ला चल रहा है। 'मिस्टर एंड मिसेज माही' ने पहले दिन 6.75 करोड़ का कारोबार किया था। दूसरे दिन कारोबार में गिरावट आई थी। शनिवार को फिल्म ने 4.65 करोड़ का कलेक्शन किया था। अब तीसरे दिन के शुरुआती आंकड़े आ गये हैं। सैकनिल्क के अर्ली ट्रेड के मुताबिक, फिल्म ने अभी तक घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 4.58 करोड़ का बिजनेस कर लिया है। हालांकि, यह शुरुआती आंकड़ा है। सही कमाई इससे ज्यादा भी होने का अनुमान है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा. दीपक अरोरा द्वारा श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि. 1-मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं आधुनिक समाचार पब्लिसिंग हाउस सी 41 यूपीएसआईडीसी नैनी प्रयागराज 211010 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक/प्रकाशक
डा. पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।